छात्रों से भी मैं मधुर संबंध बनाता। इसका अर्थ यह नहीं कि मैं
देता कि वे चाहे जो करें। मेरी इच्छा यह होती कि छात्रों को भी प्रेम तथा
से पढ़ाया जाये तथा दण्ड आदि का भय उन्हें न दिखाया जाये। छात्रों की पूरी
का मैं ध्यान रखता। मैं छात्रों के प्रतिनिधियों की एक परिषद् बनाता जि
मुझे छात्रों की कठिनाइयों की जानकारी मिलती रहती तथा मैं उन्हें दूर कर
प्रयत्न करता। इसी प्रकार मैं सप्ताह में एक बार छात्रों से मिलता तथा व्यक्ति
से उनकी समस्याओं की जानकारी प्राप्त करता।

इसी प्रकार से मैं अभिभावकों की भी एक परिषद् का गठन करवा
द्वारा अभिभावकों की कठिनाइयों की जानकारी भी मुझे मिलती रहती। मैं
में एक बार 'छात्र-अभिभावक-अध्यापक' मीटिंग करवाता जिसमें अभिभाव
पकों को छात्रों की कठिनाइयाँ बता सकें तथा अध्यापकों से अपने पुत्र-पुत्रियों
जानकारी प्राप्त कर सकें और अध्यापक भी छात्रों के बारे में खुलकर बात
मैं अभिभावकों के सुझावों का स्वागत करता लेकिन केवल टीका-टिप्पणी
को सहन नहीं करता।

मैं अपने विद्यालय में विकलांगों तथा मानसिक रूप से अविकसित बच्
भी एक केन्द्र खोलता तथा यह ध्यान रखता कि बच्चे समाज-सेवा में
रुचि लें। मैं बच्चों के लिए दस्तकारी, कला, बुनाई, कढ़ाई, लकड़ी,
मिट्टी, कागज आदि के काम सिखाने की भी व्यवस्था करता। बच्चों द्वारा
वस्तुओं की बिक्री करके मैं बच्चों के लिए ही अच्छी मशीनें, औजार आदि

मैं यह भी चाहता कि बच्चे सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लें त
कविता, अन्ताक्षरी, वाद-विवाद, नाटक आदि कार्यक्रम मेरे विद्यालय में हो
मैं अपने विद्यालय के निर्धन छात्रों का शुल्क माफ कर देता और उन्हें आर्थि
देकर पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित करता। मैं यह भी ध्यान रखता कि मेरे
साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए उचित वातावरण रहे, अतः मैं सभी धर्म
करना बच्चों को सिखाता तथा राष्ट्रीय एकता के बीज छात्रों के मन
प्रयत्न करता। मेरी यही इच्छा होती कि मेरा विद्यालय पूरे देश का आदर्श
जिसके स्वामी हों बच्चे, अध्यापक तथा अभिभावक। मेरी ईश्वर से यही क
मुझे इस लक्ष्य-प्राप्ति में सहायता दे।

17. विद्यार्थी जीवन [A.I. SSE, 1

यों तो मनुष्य जीवन भर कुछ-न-कुछ सीखता ही रहता है,
नियमित रूप से विद्या-प्राप्ति में लगा होता है तब उसे विद्यार्थी की संज्ञा
किया जाता है। विद्यार्थी शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है—विद्या +
अर्थ है विद्या-प्राप्ति के लिए इच्छुक।

प्राचीन काल में ऋषियों ने मानव-जीवन को चार भागों में
इनमें, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास...

❀ श्रीगणेशाय नमः ❀

प्राचीन तथ्यों व अन्यान्य

यन्त्र-तन्त्र-मन्त्रों की अपूर्व पुस्तक

अथ कला-कौतुक रत्न भन्डारागार सहित

मंगलाचरण

वन्दे देव उमापति सुरगुरु वन्दे जगत् कारम् ।
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनांपतिम् ॥
वन्दे सूर्यशशांकवन्हिनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियम् ।
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं, वन्दे शिवशंकरम् ॥

रावण-शिव सम्वाद

एक समय जब कि देवाधिदेव भगवान शंकर कैलाश पर्वत पर बैठे हुए अपनी घोर तपस्या में लीन थे, तब उनसे कुछ मन्त्र तन्त्र की विद्या ग्रहण करने के लिये लंकापति रावण उनके पास पहुँचा। जब शिवजी ने समाधि भंग की तब रावण उन्हें बारम्बार प्रणाम करता हुआ बोला—

नमस्ते देव देवेश सदाशिव जगतगुरो ।
तं विद्या क्षणं सिद्धः कथयस्व मम प्रभो ॥

अर्थात्—हे देवदेवेश ! हे सदाशिव । हे जगत्गुरु आपके चरण कमलों में मेरा प्रणाम है। जो तन्त्र विद्या क्षण मात्र में सिद्धि प्रदान करने वाली हो मेरे प्रभो। उस तन्त्र विद्या को मुझे सुनाइये। तब शिवजी ने कहा—

साधुपृष्टं त्वया वत्स लोकानां हितकाम्तया।
उडीश सांख्यमिदं तन्त्रम् कथयामि तव व्रतः॥

हे वत्स ! तुमने बहुत अच्छा प्रश्न किया। सो, लोगों की हित कामना से मैं यह उड्डीश नामक मंत्र तुम्हें सुनाता हूँ।

देखो, इस शास्त्र को पहले मैं छः कर्मों में विभाजित करता हूँ। यथा—

शांति वश्यस्तम्भनो विद्वेशोच्चाटने तथा।
मारणं तानि शंसतिषट्कर्माणि मनीषिणः॥

अर्थात्—शांति कर्म, वशीकरण स्तभन विद्वेषण, उच्चाटन तथा मारण, इन छः प्रयोगों को पण्डित जन षट्कर्म कहते हैं।

इन्हीं छह कर्मों से अनेक प्रकार के प्रयोग किये जाते हैं जैसे—वशीकरण उच्चाटन मोहन विद्वेषण आकर्षण यक्षणी साधन स्तम्भन जल स्तम्भन, स्वस्तम्भन रसायन मारण भूताकर्षण उन्मादन गांव का उच्चाटन अंधीकरण भूत ज्वर गात्र संकोचन विधिकरण लूककरण

भूत ज्वर करण मेघों का स्तम्भन दधि आदिक वस्तुओं का नष्ट करना मत्त तथा उनमत्त करण हाथी घोड़ा का परकोपन सर्पों का आकर्षण मनुष्यों का आकर्षण सत्य आदि का नाशन दूसरे के पुर में प्रवेश करने बैताल आदि की सिद्धि और पादु का व अंजना सिद्धि इसके अतिरिक्त इन्द्रजाल और यक्षणी मन्त्र साधन गुटिका सिद्ध शून्य मार्ग में जाना मृतसंजीवनी विद्या रौद्रा विद्या तथा और भी गुप्त औषधियों के द्वारा होने वाले अनेक कार्य होते हैं।

●

षट्कर्म व्याख्या

॥ वशीकरण मन्त्र ॥

वशीकरण का मुख्य उद्देश्य यह है कि वह हर किसी को वश में कर सकता है वशीकरण शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है, परन्तु विधिवत उसका जाप करना भी परम आवश्यक है गोस्वामी तुलसी दास जी अपना मत इस पर प्रकट किया है।

तुलसी मीठे वचन से सुख उपजत चहुँओर।
वशीकरण एक मन्त्र है, तज दे वचन कठोर॥

गायत्री पर मैस्मेरेजम

जगत में जो कुछ जड़ और चेतन दिखलाई पड़ता है वह सब गायत्री का ही स्वरूप है। शब्द भी गायत्री है, गायत्री के द्वारा संसार के सभी असम्भव काम सम्भव होते हैं और भयानक से भयानक दुख का निवारण होता है।

(उपनिषद से)

गायत्री की शक्ति ही संसार के लिए सर्व शक्ति है।

···मनु महाराज

'गायत्री पर नाटक यानि मैस्मेरेजम करने वाले ही प्रधान योगी है और वे जनता की बहुत बड़ी सेवा कर सकते हैं।

स्वामी विवेकानन्द

उपजहिं जासु अंश गुण खानी।
अगिनत उमा रमा ब्रह्माणी॥

तुलसीदास

उच्चाटन मन्त्र व्याख्या

उच्चाटन मन्त्र से दो प्रेमियों का उच्चाटन यानी अलग-अलग होना प्रतीत होता है। इसके अन्तर्गत

जपोयोग है। जिससे अभ्यासी दूसरों पर विजय प्राप्त करता है।

॥ मोहन मन्त्र व्याख्या ॥

मोहन मन्त्र से दूसरे लोगों को मोहित कर अपने आश्रित बनाया जाता है। इसके अन्तर्गत स्तम्भन है जिससे प्रेम अच्छा हो जाता है।

॥ विद्वेषण विवेचन ॥

इस मन्त्र के जाप से दो मनुष्यों में विरोध पैदा हो जाता है। इसी के अन्तर्गत दरावर्ण है जिसके द्वारा स्त्रियों को रज स्थिर किया जाता है।

आकर्षण मन्त्र व्याख्या

आकर्षण मन्त्र से दूसरे देश में बैठे हुए मनुष्यों को अपने पास बुलाकर उनसे इच्छानुसार कार्य कराया जाता है। इसके अन्तर्गत ही वह रसायन विद्या है कि जो पदार्थों से मिलकर वह कार्य करेगी कि जो आकर्षण मन्त्र करता है।

यक्षिणी साधन

वशीकरण मन्त्र के भीतर ढकी हुई यक्षिणी साधन क्रिया है। जब ओझा विद्यावान इस क्रिया को सीख

जाते हैं तब उसके अनेक नाम रखकर कल्पित इष्टधारी बनते हैं। भूतपरेत दूसरी बात है। भूत प्रेतों का इससे कुछ भी सम्बन्ध नहीं। किन्तु वह भी वशीकरण की ही एक सहाचरी है।

स्तम्भन व्याख्या

जिस क्रिया से कोई वस्तु कुछ काल तक वहीं पर ठहर जाय वही स्तम्भन है। यह मोहन मन्त्र ठहराने की शक्ति है। आयुर्वेदाचार्यों ने पुरुष वीर्य और स्त्री रज का औषधियों द्वारा रोकने के विधान को स्तम्भन कहा है।

बाजीकरण व्याख्या

जिस क्रिया से वृद्ध और जीर्ण अवस्था वाले स्त्री पुरुषों को सांसारिक सुख दिया जाता है इसको बाजीकरण कहते हैं। शस्त्रज्ञों ने अनेक तन्त्र मन्त्र लिखें परन्तु हमको मंत्र कोई नहीं मिलते हां वैदक शास्त्रों में कुछ कुछ औषधियां अवश्य लिखी हैं जिससे कायाकल्प हो जाता है। दूसरे शब्दों में काया कल्प करना ही वशीकरण है।

रसायन व्याख्या

द्रावड़ का अर्थ है प्रवाहित या स्खलित होना जब

पुरुष स्त्री को वशीभूत करना चाहते हैं तो उस पर अनेक प्रकार की स्तम्भन औषधि अथवा मन्त्र तन्त्रों का प्रयोग कर स्त्रियों को द्रावण कराने वाली औषधियां पान कराते हैं। स्त्री को पहले स्खलित कर देना भी एक प्रकार का वशीकरण है परन्तु कोई चतुर स्त्री पुरुष को अपने वशीभूत करने का प्रयत्न इसके विरुद्ध द्रवणीय औषधियों को खिलाकर स्वयं स्तम्भन बूटी सेवन करती है और अनेक प्रकार का काम क्रीड़ा से मोहित कर पुरुष को अपने अधीन कर देती हैं। यह द्राविन प्रभाव है।

मारण मन्त्र व्याख्या

जिस कर्म से किसी प्राणी का प्राण हरण कर लिया जाय उसे मारण प्रयोग कहते हैं. परन्तु

प्राणान्तु संकटे जाते, कर्त्तव्यं भृतिमिच्छिता।
मारणं च वृथा कार्य यस्य कस्य कदा चन ॥

अर्थात्--यह मारण प्रयोग किसी पर वृथा नहीं करना चाहिये। जहाँ पर प्राणान्त संकट उपस्थित हो वहाँ अपने कल्याण की इच्छा से विधि पूर्वक इस प्रयोग को करना चाहिए। अज्ञानता से बड़ी सावधानी रखनी चाहिए। अज्ञानता से किया हुआ मारण प्रयोग अपने ही ऊपर आकर पड़ता है। इस कारण अपनी आत्मा

की सदा रक्षा करने वाले पुरुष को योग्य हैं कि वह मारन योग कभी न करे विचारवान पुरुष को यह परम आवश्यक है कि जहां तक हो सके इससे अपने को बचा लेता है वह ब्रह्मज्ञानी है परन्तु जो स्वार्थ वश अपने को ऐसे कर्म से नहीं बचाता वह मूर्ख बड़े ही दोष का भागी होता है।

इसी प्रकार सब कर्मों के अलग-अलग गुण हैं। उन्हें विधिपूर्वक करने से अभीष्ठ फल की प्राप्ति होती है।

नियम

उडीश तन्त्र का ऐसा मत है कि इसमें प्रयोगों के करने में न तो तिथि का नियम है न नक्षत्र का नियम है न वार का न व्रत का न हवन का और न तो समय का ही कुछ नियम है। केवल तन्मात्रा करके सब औषधियां सिद्ध दायक हैं। ये केवल साधन मात्र से ही क्षणभर में सिद्धि देने वाली हैं। परन्तु उन्हें शास्त्रों ने तिथि आदि की विधि और आवश्यकता बतलाई है इसलिए अब उन विधियों बतला कर हम पहले मारण प्रयोग को आरम्भ करेंगे।

षटकर्मों के देवता

शांति कर्म की अधिष्ठात्री रति हैं। वशीकरण की सरस्वती स्तम्भन की लक्ष्मी विद्वेषण की ज्येष्ठा उच्चाटन की दुर्गा और मारण कर्म की अधिष्ठात्री दुर्गा देवी हैं। जिस प्रकार का जैसा प्रयोग करना अभीष्ट हो उसके आरम्भ में उसकी पूजा करे।

षटकर्मों के करने का समय

पहले पहर में शान्ति कर्म दूसरे पहर में वशीकरण स्तम्भन और मोहन तीसरे पहर में उच्चाटन विद्वेषन और चौथे पहर में मारण कर्म करना चाहिए।

षट् कर्म लक्षण

(१) शांति कर्म—जिससे रोग कृत्या (जादू टोना) और ग्रह आदि की शान्ति होती है, उसको शान्ति कर्म कहते हैं।

(२) वशीकरण—जिस कर्म से सभी प्राणियों को वश में किया जाता है, उसे वशीकरण कहते हैं।

(३) स्तम्भन—जिससे प्राणियों की प्रवृत्ति को रोक दिया जाय, उस कर्म को स्तम्भन कर्म कहते हैं।

(४) विद्वेषण—दो प्राणियों में जो परस्पर प्रेम हो,

उस प्रेम को यथाशक्ति जिस कर्म द्वारा अलग-अलग कर दिया जाय, उस कर्म को विद्वेषण कर्म कहते हैं। उसमें पति-पत्नी या दोस्तों अथवा दो पुरुषों के आपसी प्रेम को छुड़ा देना मुख्य विषय माना गया है।

(५) उच्चाटन—जिस कर्म के द्वारा किसी प्राणी मात्र को उसको (अपने) निवास स्थान से पृथक् (अलग) कर दिया जाय, उस कर्म को उच्चाटन कर्म कहते हैं।

(६) मारण—जिस किसी कर्म के द्वारा प्राणियों के प्राण को नष्ट कर दिया जाय, उस कर्म को मारण कहते हैं।

छः कर्मों के अन्तर्गत प्रयोग

इन उपरोक्त छः प्रकार के कर्मों के अन्तर्गत निम्नलिखित प्रयोग कहे गये हैं।

(१) मारण।

(२) मोहन।

(३) स्तम्भन।

(४) विद्वेषण।

(५) उच्चाट।

(६) वशीकरण।

(७) आकर्षण ।
(८) यक्षिणी साधन ।
(९) रसायन क्रिया से कार्य करना ।
(१०) भूताकर्षण ।
(११) उन्माद ।
(१२) गांव का उच्चाटन ।
(१३) जल-स्तम्भन ।
(१४) सर्व स्तम्भन ।
(१५) अन्धाकरण ।
(१६) ध्रुवीकरण ।
(१७) गात्र संकोचन ।
(१८) विधिकरण ।
(१९) लूककरण ।
(२०) भूत ज्वर करण ।
(२१) मेघ स्तम्भन ।
(२२) दीप आदि वस्तुयें नाश करना ।
(२३) मत्त करण ।
(२४) उन्मत्त करण ।
(२५) हाथी घोड़ों का प्रकोपन ।
(२६) बेताल आदि की सिद्धि ।
(२७) पादुक सिद्धि ।

(२८) अंजन सिद्धि ।

(२९) इन्द्रजाल कौतुक ।

(३०) गुटिका सिद्धि ।

(३१) रौद्र विद्या ।

(३२) शून्य मार्ग में जाना ।

(३३) मृत संजीवन विद्या ।

(३४) औषधि द्वारा गुप्त कार्य करना ।

—:※:—

ऋतु के अनुसार विचार

हेमन्त ऋतु में शान्ति कर्म करें तथा बसन्त ऋतु में वशीकरण और शिशिर ऋतु में स्तम्भन कर्म तथा ग्रीष्म ऋतु में विद्वेषण कर्म करें और मारण कर्म को शरद् ऋतु में करना चाहिये। उच्चाटन का कर्म वर्षा ऋतु में करें।

वर्ण विचार

अकर्षण प्रयोगों तथा वशीकरण में लाल रंग का ध्यान धरना चाहिये। विषहरण और शान्ति कर्म में तथा पुष्टि कर्म में श्वेत रंग का ध्यान धरना चाहिये। स्तम्भन कर्म में पीले रंग का ध्यान करें और उच्चाटन कर्म में

रक्त वर्ण तथा विद्वेषण कर्म में वीर भैंसा लाल रंग व मारण प्रयोग में काले रंग का ध्यान करे।

माला निर्णय

(१) वशीकरण और पुष्टि-कर्म में परवाल (मूंगा), वज्र (हीरा, मणि (रत्न) आदि की माला से काम लिया जाता है।

(२) आकर्षण कर्म में-मदमत्त हाथी के दाँत की माला के मनिकाओं से उत्तम कार्य होता है।

(३) विद्वेषण और उच्चाटन कर्म में-मनुष्य के सिर के बालों से घोड़ों के दाँतों से बनाई हुई माला सिद्धि दायक होती है।

(४) मारण कर्म में-गधे की आँतों से बनी माला या बिना युद्ध में मरे मनुष्य (पुरुष हो) के दाँतों की माला से जप करना चाहिये।

(५) धर्म, काम और अर्थ सिद्धि के लिए शंख या मणि की माला इस्तेमाल करनी चाहिये।

(६) सर्व कामना और अर्थ सिद्धि के लिये पद्मनाम (कमलगट्टा) की माला से जाप करें।

(७) विद्या की प्राप्ति तथा सरस्वती की सिद्धि के लिये स्फटिक व मोतियों या रुद्राक्ष या मूंगा की माला

से उत्तम सिद्धि प्राप्त होती है। जीया पोता की माला भी ठीक है।

नोट-रुद्राक्ष की माला से किया हुआ मन्त्र जप सम्पूर्ण फल का देने वाला होता है।

*

डोरे का निर्णय

१-शान्ति कर्म और पौष्टिक कर्म में मध सूरज के डोरा से पिरी हुई माला शुभ होती है।

२-उच्चाटन और आकर्षण कर्म में घोड़े की पूंछ के वालों द्वारा पुवी हुई माला से कार्य करें।

३-मारण कर्म के लिये मनुष्य के शरीर की नसों से पिरोई हुई माला उत्तम कही गई है।

४-अन्य सब कर्मों में कपास, सूत की पुई हुई माला श्रेष्ठ कही गई है।

मनिकाओं का निर्णय

समस्त तान्त्रिक कर्मों में तान्त्रिक विद्वानों ने १०८ (एक सौ आठ) मनिकाओं की माला को सर्व श्रेष्ठ माना है। केवल अभिचार कर्म में पन्द्रह मनिकाओं की माला पूर्ण फलदायक कही है और सत्ताईस (मनिकाओं) की माला सर्व सिद्धिप्रद होती है।

दिशा और मुख का विचार

मन्त्र जपने के समय किस कर्म में किस दिशा की ओर मुख करके बैठना चाहिये। इस बात का विचार निम्नलिखित प्रकार से है—

कर्म	दिशा
वशीकरण कर्म में	पूर्व दिशा में
मारण कर्म में	दक्षिण दिशा में
धन लाभ को	पश्चिम दिशा में
शान्ति कर्म में	उत्तर दिशा में
आयु रक्षा को	,, ,, ,,
पुष्टि कर्म	,, ,, ,,

जप के लक्षण

जप करने के तीन भेद बताये गये हैं :—

१—वाचिक

२—उपांशु

३—मानसिक

(१) वाचिक-जप—जो जपते समय दूसरों द्वारा सुन लिया जाय, वह वाचिक जप कहा जाता है।

(२) उपांशु—जो जप-मन्त्र किसी दूसरों को सुनाई न दे और स्वयं सुन सके, उसको उपांशु जप कहते हैं।

(३) मानसिक—जिस जप मन्त्र में होंठ और जिभ्या न चले तथा वह मन्त्र जिसका जप किया जाय केवल मन (हृदय) में ही ध्यान पूर्वक जपा जाय। इस प्रकार के जप में मन के द्वारा अक्षरों पर ध्यान किया जाता है इसको मानसिक जप कहते हैं। अब आप यह जानने के लिए किस कर्म में किस जाप का करना उत्तम होता है, नीचे लिखे हुये से ज्ञान प्राप्त करें।

अभिचारण (मारण) आदि प्रयोगों में वाचिक जप करना सिद्धिदायक होता है। शान्ति कर्म, पौष्टिक, मोक्ष तथा मारण कर्म में मानसिक जप उत्तम बतलाया गया है। पापों का नाश करने के लिए तीन ही प्रकार के जाप को श्रेष्ठ माना जाता है।

मन्त्र की प्रवृत्ति जानना

मन्त्र चार प्रकार की प्रकृति के होते हैं। उन्हीं के अनुसार सिद्धि प्राप्त होती है। जानने के लिये नीचे लिखे को पढ़कर जानकरी प्राप्त करें।

१–सिद्धि
२–साध्य
३–सुसिद्ध
४–शत्रु

१. सिद्धि–यदि सिद्धि होय तो समय पाकर कार्य को बनावेगा।

२. साध्य–यदि साध्य होगा तो कार्य को नहीं बनावेगा।

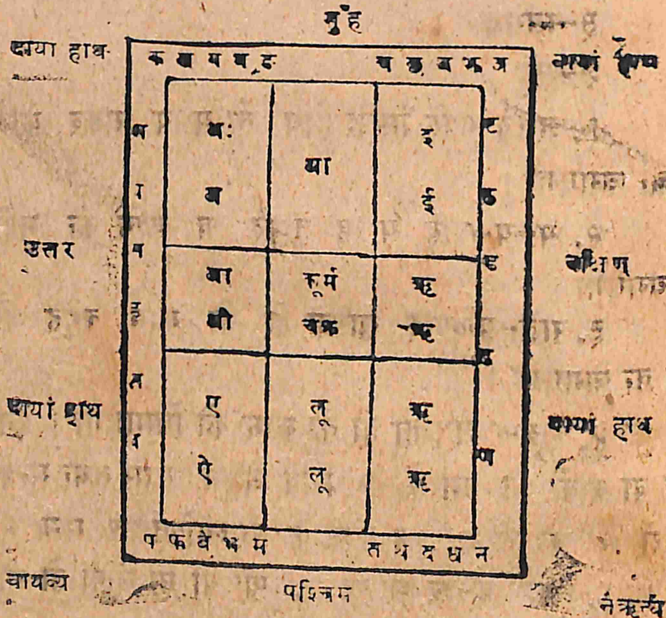
३. सुसिद्धि–यदि सुसिद्ध हो तो कार्य बहुत ही शीघ्र बनावेगा।

४. शत्रु–यदि शत्रु हो तो काम को बिगाड़ेगा। इन चारों बातों को जानने के लिये अपने नाम तथा मन्त्र सिरे से अक्षरों को १२ कोठे के निम्नलिखित मन्त्र में देखो। यदि वह अक्षर पहला, पांचवां या नौवां हो तो मन्त्र की सिद्ध प्रकृति का मान लो।

यदि वह मन्त्र का पहला अक्षर जप कर्त्ता के नाम से दूसरा, छटा, सातवां हो तो मन्त्र साध्य प्रकृति का

जानना चाहिये। यदि वह अक्षर आठवां या बारहवां हो तो वह मन्त्र सुसिद्धि प्रकृति वाला होता है।

सुसिद्धि वाला मन्त्र हो तो उसके जप करने से सुख प्राप्त होता है। कदाचित मन्त्र में तीन चार बीज हों तो लाभ, प्रतिलोभ के मार्ग से जो बीज सुसिद्धि हो उसे मन्त्र के आदि में लगावें।



कूर्म चक्र जो ऊपर लिखा गया है उसको देखकर के सिर पर आसान बिछाकर बैठे तो मन्त्र सिद्धि प्राप्त

होती है। इसके लिए यह रीति है कि जिस स्थान में पूजन करने को बैठे उस स्थान के नौ भाग करे, फिर स्थान के नाम से मिलाकर अक्षर को जिस भाग में देखे उसके नौ भाग करले, फिर नौ भाग करके पहले पहले अक्षर की मात्रा हो उसी मात्रा के स्थान में आसन बिछाकर रखे। जिस तरह कि कोठे का प्रथम अक्षर कूर्म का सिर है तो सिर में नौ भाग में जो कि मात्रा उत्तर की दिशा के मध्य स्थान पर पड़ रही है वह स्थान जिसमें लगी हुई है वही स्थान आसन बिछाने का है और फिर इसी स्थान में कूर्म का सिर जानिये। इस प्रकार कूर्म स्थान के जितने सिर हैं उन सबको कूर्म का सिर ही जानना चाहिये।

उंगली का निर्णय

आकर्षण मन्त्र का जाप करने के लिए अंगूठे और अनामिका नामक उंगली से माला को फेरना चाहिए। शान्ति कर्म और स्तम्भन कर्म तथा वशीकरण कर्म के लिए अंगूठे और बीच की उंगली से माला को फेरे और उच्चाटन कर्म में अंगूठे और अनामिका उंगली से माला फेरे। मारण प्रयोग के जाप में कनिष्ठा नाम की उंगली जो सबसे छोटी है उससे माला फेरनी चाहिये।

मन्त्र का लिंग निर्देशन

मन्त्र तीन प्रकार के होते हैं :—

(१) पुल्लिङ्ग—इसमें हूं फट् का प्रयोग होने वाले मंत्र पुल्लिङ्ग जाति के मन्त्र होते हैं।

(२) स्त्री लिंग—यह मन्त्र अर्थात् वहिन्जायान्त स्वाहान्त मन्त्र स्त्री जाति के होते हैं।

(३) नपुंसक—इन मन्त्रों में नमः का प्रयोग किया जाता है इस कारण यह मन्त्र नपुंसक जाति के होते हैं।

पुन्लिङ्ग मंत्रों का प्रयोग वशीकरण तथा शान्ति कर्म में किया जाता है तथा क्षुद्र क्रियाओं में स्त्री लिंग मन्त्रों का उपयोग करना होता है। अन्य कामों में नपुंसक संज्ञा वाले मन्त्रों का प्रयोग किया जाता है।

छः कर्म के देवता

शान्ति कर्म की स्वामी देवी रति है तथा स्तम्भन कर्म की स्वामी लक्ष्मी जी हैं और वशीकरण कर्म की स्वामी सरस्वती जी हैं। वैर की यानि विद्वेषण की स्वामी ज्येष्ठा हैं तथा उच्चाटन कर्म की स्वामी दुर्गा देवी और

मारण प्रयोग की स्वामी भद्रकाली हैं। जिस कर्म को करे उसी के अनुसार उस कर्म के स्वामी का पूजन करना चाहिए।

अथ षट् कर्म चक्रम्

षट् कर्म	शान्ति कर्म	स्तम्भन	विद्वेषण	उच्चाटन	मारण
दिशा	ईशान	पूर्व	नैऋत्य	वायव्य	आग्नेय
देवता	रति	लक्ष्मी	ज्येष्ठा	दुर्गा	भद्रकाली
ऋतु	हेमन्त	शिशिर	ग्रीष्म	वर्षा	शरद्
रंग	श्वेत	पीला	लाल	धूम्रवर्ण	काला
जप	उपांशु	वाचिक	वाचिक	वाचिक	वाचिक
समय	सुबह से दिन के १० बजे तक	संध्या काल	मध्यान्ह काल	तीसरे पहर मे	सन्ध्या काल मे

कलश स्थापन विधि

नौ रत्नों से अलंकृत करके स्वर्ण के कलश को शांति

कर्म में स्थापना करनी चाहिये। यह अरमुत्तम योग कहा गया है। यदि स्वर्ण का कलश प्राप्त न हो तो चाँदी या तांबे का कलश स्थापित करें।

अभिचारण (मारण) आदि कर्म में लोहे के कलश की स्थापना करें। उच्चाटन में कांच के कलश की स्थापना करें। ऐसा करना शुभ कहा गया है। मोहन कर्म में रूपे का कलश रखना चाहिए और उच्चाटन कर्म में मिट्टी के कलश की स्थापना करें तो कार्य सिद्ध होता है। यदि इन समयों पर उचित प्रकार का कलश प्राप्त न हो सके तो सबके लिए तांबे का कलश स्थापित करें। यह सब में उत्तम सिद्धिदायक रहता है।

हवन की सामग्री

जिस कर्म में जिस वस्तु द्वारा हवन किया जाता है उनका वर्णन निम्नलिखित रीति से है।

शान्ति कर्म में—घी, दूध, तिल, गूलर, और पीपल की लकड़ी से हवन करें तथा आम फल और घी का हवन करना उत्तम कहा गया है।

पुष्टि कर्म में—घी, बेलपत्र, चमेली के फूलों से हवन करें। कन्या आदि की इच्छा के लिए—खीर का हवन

करें। लक्ष्मी प्राप्ति की इच्छा के लिए–कमल गट्टा घृतलिप्त अन्न का हवन करना चाहिये।

समृद्धि की इच्छा के लिए–घी, विल्व पत्र, तिल का हवन करें।

आकर्षण में—राई लवण का हवन करें।

उच्चाटन में–कौए के पंख का हवन करना चाहिए।

मोहन में–कौए के बीज का प्रयोग करके हवन करना चाहिए।

मारण प्रयोग में–विष को रुधिर मिलाकर हवन करें अन्य सब विधियाँ मन्त्र व तन्त्र के साथ ही वर्णन की जायेंगी।

हवन की मुद्रा

मुद्राहीन आहुति को देवता स्वीकार नहीं करते हैं। अतः सदैव मुद्रायुक्त ही हवन की हवन की आहुति देनी चाहिए। जो मनुष्य यह जानते हुए भी मुद्राहीन हवन करते हैं वे मनुष्य स्वयं ही नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं।

आसन का विचार

सिद्धि करने में प्रयोग के लिए कितने ही प्रकार के आसनों का प्रयोग किया जाता है।

अतः जिस प्रकार के मन्त्र सिद्धि का कार्य हो उसी प्रकार के आसन से सिद्धि करने को जप करने चाहिए। आसन विचार निम्न अनुसार देखिए---

पुष्टि कर्म में	पद्मासन
शान्ति कर्म में	स्वास्तिकासन
मारण में	विकटासन
विद्वेषण में	कुक्कुटासन
उच्चाटन में	अधः स्वस्तिकासन
शान्ति प्रयोग में	भद्रासन
मारण प्रयोग में	भैंस के चर्म का आसन
उड़ाने के प्रयोग में	हाथी के चर्म का आसन
वशीकरण में	मेढा के चर्म का आसन
आकर्षण में	बाघम्बर का आसन
उच्चाटन प्रयोग में	ऊंट के चर्म का आसन

नोट-जैसा कर्म करना होता है उसी प्रकार के कर्म अनुसार आसन को अपना कर जाप किया जाता है ऐसा शिवजी ने रावण से कहा था। आसन बैठने से पहले अपने आप को कूर्म चक्र की रीति से बिठाकर करने से कार्य की सिद्धि होती है। यह कूर्म चक्र संसार से गुप्त है तभी इसे गुप्त रखने का साधन करे।

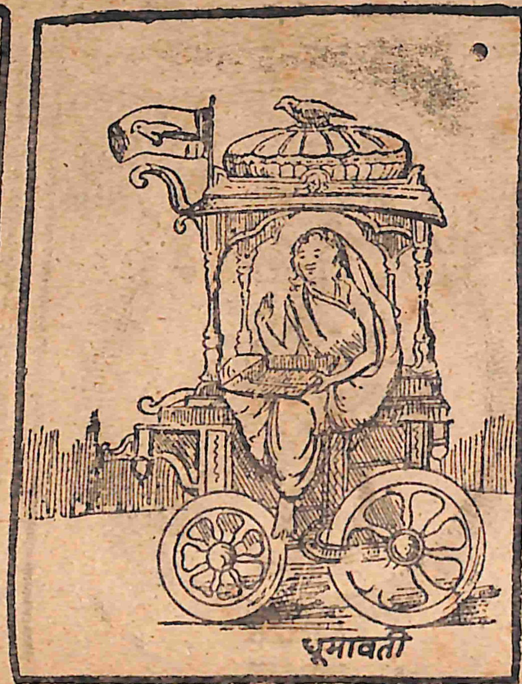


भुवनेश्वरी



सरस्वती


कमला


धूमावती



षोडशी



त्रिपुर भैरवी


काली



दूसरा भाग

मारण प्रयोग

शिवोवाच

अथांत संप्रवक्षयामि प्रयोगं मारणामिदम ।
सद्यः सिद्धिकारिणां शृणुयात् परम यत्नतः ॥

शिव जी बोले—अब आगे मारण मन्त्र का वर्णन करता हूँ जो मनुष्यों को शीघ्र ही सिद्धिदायक फल वाला है । उसे परम यतन पूर्वक श्रवण करो ।

मारण मन्त्र का प्रभाव

इन्द्रस्य च यथा वजरं पाशश्च वरुणस्य च ।
यमस्य च तथा दण्डो वहबेशक्ति यथा दहेत ॥
तथैवते महायोगाः प्रयोज्येद्य नेर्मण ।
सूर्य प्रभातवेद्भूमौ नेतद् मिथ्या भविष्यति ॥
आपकारिषु दुष्टेषु पापिष्टेषु जनेषु च ।
प्रयोगैर्हन्य मानेषु दोषो नैव प्रजापते ॥
या जपे निमित्तः य आत्मघातो न संशयः ।
असतुष्टः प्रयोग यः शास्त्र नेतत्र सिद्धिदम् ॥

जिस इन्द्र का वज्र और दारुण का पास यम का दण्ड और की जैसी शक्ति दाह करने की है वैसी ही महाप्रयोग उद्यम कर्म में शीघ्र सिद्धि के निमित्त प्रयोजित करे। इस प्रयोग के प्रभाव से चाहे सूर्य पृथ्वी पर गिरा देवे वह मिथ्या नहीं है।

अपकारी दुष्ट और पापी जनों पर मारण प्रयोग करने से दोष नहीं होता परन्तु जोगीजन भोजन करता है वह निःसंदेह आत्माघाती असन्तोषी है उसको यह तन्त्र शास्त्र सिद्धियों का देने वाला नहीं होता।

शत्रु मारण मन्त्र

ॐ नमः शर्वकाल संहाराय अमुक-हन क्रीं फट् कुरु स्वाहा।

१. नीम की कील अंगुली के आकार कीले उसमें शत्रु के सिर के बाल लपेट कर शत्रु का नाम लिखे। फिर तीन दिन या सात रात्रि पर्यन्त शत्रु का नाम उसी कील पर चिता के कोयले से लिखकर सावधानी से उसे धूप देवे और कृष्णपक्ष की अष्टमी से लेकर कृष्ण चतुर्दशी तक यह प्रयोग प्रतिदिन एक सौ साठ मन्त्र जपे तो मन्त्र के प्रभाव से शत्रु को प्रेत शीघ्र ही ग्रहण कर लेता है।

दूसरा प्रयोग यन्त्र

ॐ नमो भगवत भूताधिपतए विरुपाक्षाय। घोर दृष्टि ने विकराली ने ग्रहंयत्त भूतेनानन।

शंकर अनुकेड्न हम दह दह पच पच ग्राहण हूँ फट्

ठः इस मन्त्र के जप से भी उपरोक्त (१) नियम से शत्रु का नाश किया जाता है। अमुक के स्थान में जाप करते समय शत्रु का नाम लेना चाहिए।

तीसरा प्रयोग

नगस्थि कीलकं पुष्पे ग्रहज्जतुरगगूलं।
मिखनेतू गृहे यावत्तावतस्य कुलक्षणः॥

मन्त्र—ॐ ह्रीं फट् स्वाहा अपुत जपासिद्धि।

अर्थ—पुष्प नक्षत्र जिस दिन हो तब उस दिन मनुष्य के हाड़ की चार अंगुल कील लेकर जिस पर गाड़ दी जाय जब वह गड़ी रहेगी तब तक उस वैरी के कुल का क्षय जानना।

ॐ ह्रीं फट् स्वाहा यह मन्त्र दस हजार जपने से सिद्धि प्राप्ति होती है। अन्य युगों में उक्त संख्या के अनुसार जाप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता परन्तु कलौ-चैव चतुर्गणम् इस विधि के अनुसार कलियुग में उक्त

संख्या से सौगुना जप करे और संख्या से दशांश हवन तददशांश तर्पण तदशांश मार्जन तदशांश ब्राह्मण भोजन करावे यह परमोत्तम क्रम सर्वत्र जानना।

शत्रु नाशन यन्त्र

ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं देवदत्त ह्रीं ॐ

इस मन्त्र को कौवे के पंख से भोजपत्र पर विष और हरताल से लिखे और विधिवत फूल माला नैवेद्य आदि से भक्ति युक्त पूजन करे रविवार के दिन इस मन्त्र को श्मशान में ले जाकर, गाड़ दे तो अकस्मात शत्रु की मृत्यु होय।

शत्रु संतति विनाशक मन्त्र

चौथा प्रयोग

ॐ सुरेश्वराय स्वाहा—इस मन्त्र को जपता हुआ मनुष्य सांप के हाड़ की अंगूठी कील लेकर अश्लेखा नक्षत्र के दिन १०८ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिस शत्रु के घर में एकांत में रख दे तो निश्चय ही उसकी संतति का विनाश होवेगा।

शत्रु विनाशक अथ मन्त्र

क	ह	१	८
क	ह	१	८
क	ह	१	८
क	ह	१	८

इस यन्त्र को कागज पर स्याही से शत्रु का नाम लिखकर चूल्हे के मुंह पर रख कर छुरा मारे और फिर उस छुरी को उसी मन्त्र से भौंक कर चूल्हे पर खड़ी गाड़ दे और सात दिन तक ना उखाड़े तो निश्चय ही शत्रु का नाश होवे।

शत्रु कुल-कुटुम्ब नाशक मन्त्र

छठवां प्रयोग

आश्वास्थि कील महिवन्या निखनेच्चतुरंगम् ।
शत्रु गृहे निहन्त्याशु कुटुम्ब वरिणाकुलम् ॥

मन्त्र—हुँ हुँ फट् स्वाहा ॥ सप्त दशभि न मंत्रित कृत्वा निखन्त् ।

घोड़े की हाड़ की चार अंगुल प्रमाण कील अश्वनी नक्षत्र के नक्षत्र के दिन लेकर बैरी के घर में दाब कर

रखदो तो शीघ्र वैरियो के कुलकुटुम्ब का नाश होवे। 'हुँ फट् स्वाहा' मन्त्र को एक हजार बार पढ़ कर कील का अभिमंत्रित करके दाबकर रख देवे।

सातवां प्रयोग

इस मन्त्र को १०८ बार स्याही से तिकटी पर लिखे

३ १ ० १ ३ ०

३ १ ० १ १ ३ ० १ १ ३

१ ३ १ ३

तो शत्रु का नाश होवे।

शत्रु मारण का आठवां प्रयोग

आद्रा नक्षत्र के दिन नील वृक्ष के बांदा को लाकर शत्रु के शयन मन्दिर में गाड़ देवे तो शत्रु मृतक के समान हो जाता है। जब उखाड़ देवे तो वह फिर सुख पूर्वक चैतन्य हो जावेगा।

नवां प्रयोग

सिरस का बांदा आद्रा नक्षत्र में लाकर घर में गाड़ देवे तो शत्रु का नाश हो जाता है। फिर 'हुँ फट् स्वाहा' मन्त्र से उस सिरा के कील को इक्कीस बार अभिमन्त्रित करके गाड़ देवे।

दसवां प्रयोग

इस मन्त्र को कागज पर लोहे की कलम और हाथी

४२	४९	२	७
६	३	४६	४५
४८	४३	८	१
४	५	४४	४७

के नाखून की स्याही से लिखकर श्मशान में गाड़े तो शत्रु की मृत्यु हो जावे।

ग्यारह शत्रु नाशक यन्त्र

ऐं	लीं	श्रीं	हीं	हां	हां
ला	रं	भ	च	कु	म
म	च	ज्ये	च	जी	सुं
च	ते	म	य	द	च
प	ब	ल	ठ	र	च
उ	द्र	पी	र	ल	स

पहले गधे के कान का खून निकल इस मन्त्र को उस खून से शमशान की ईंट पर लिखो फिर रविवार या मंगलवार के दिन अर्ध रात्रि में जाकर इस (मन्त्र को शत्रु की छत पर या उसके रहने की कोठरी में डाल दो

तो शत्रु के घर में रात दिन कलह और द्वेष रहेगा तथा धीरे-धीरे करके शत्रु के घर का नाश हो जायेगा यह निश्चित है ।

बारह पुनः शत्रु मारण मन्त्र प्रयोग

शत्रु को ज्वर से पीड़ित करके मारना

मन्त्र---ओं ह्रां ह्रां ह्रिं जे ह्रों ह्रौं ह्रंह्रः अमुकं गृह्णो गृहें हूँ हूँ ठ ठ ।

इस मन्त्र को पढ़ता हुआ मनुष्य के हाड़ के कील को १००० बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिसके नाम से चिता के बीच गाड़ देवे तो वह ज्वर से पीड़ित होकर नाश को प्राप्त हो जाता है ।

अथवा

ऊपर कहे हुए मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिस शत्रु के घर में गाड़ देवे अथवा जिसके नाम से श्मशान में आधी रात के समय गाड़ देवे तो उसका नाश हो जाता है ।

रिपुविष्टां वृश्चिककंच स्वनित्या तु विनिक्षिपेत् करे अच्छाद्यवरणनात तत्पृष्ठे मृत्तिकां विपेत म्रियते मल रे ध बुद्ध ते च पुनः सुख ॥

शत्रु का विष्टा और चोटी को लाकर एकत्र करे फिर उसको एक ढके पात्र में रखकर पृथ्वी में एक गड्ढा खोदकर उसमें रख देवे, ऊपर से मिट्टी डाल देवे तो वैरी को मल रुककर उसकी पीड़ा होवे और मरने लगे फिर यदि उसे बचाना हो तो उसको उखाड़ डालो आराम हो जावेगा।

अथ

मारण प्रयोग

देह के मन्त्र द्वारा शत्रु मारण प्रयोग

वृष	कर्क	तुला
८	१	६
३	५	७
४	९	२

कृष्णपक्ष में शनिवार के दिन मदार का पत्ता लाकर दक्षिण ओर मुंह करके इस मन्त्र को लिखना आरम्भ करे और तब से पन्द्रह दिन तक बराबर लिखता रहे। पन्द्रह मन्त्र प्रतिदिन मदार के पत्ते पर लिखे। मन्त्र के नीचे शत्रु का नाम लिखे और अग्नि में जला दे तो शत्रु का नाश हो।

शत्रु विक्षिप्तकरण प्रयोग

रविवार के दिन श्मशान की भस्मी मंदार के दूध में मिला कर कागज पर इस मन्त्र को लिख और यन्त्र के नीचे शत्रु का नाम लिखकर अग्नि में जला दे और ॐ हरि हरस्तया, मन्त्र को १०८ बार जपे तो शत्रु विक्षिप्त हो जाय।

भैरव स्थान प्रयोग

शत्रु के पांव तले की मिट्टी को मंगल के दिन लाकर उसे गो मूत्र से सींच करके शत्रु के नाम की एक पुतली बनावे, फिर जहां कोई मनुष्य न हो ऐसे एकान्त नदी के तट पर वेदी निर्माण करके उस पर मूर्ति की छाती पर अति पैनी धार वाला त्रिशूल गाड़ देवे और उसकी बांई ओर वेदी में काल भैरव की स्थापना करे, नित्य प्रति यथोक्त विधान से बलि प्रदान और पूजा करे। फिर वहां ग्यारह ब्रह्मचारियों आदि मधुर स्वादिष्ट भोजन करावे। उसमें भैरव के सम्मुख कडुवे तेल का एक अखंड दीपक जलता रहे और दुश्मन की प्रतिमा के दाहिने भाग व्याघ्र चर्म का आसन बिछा उस पर आप दक्षिण मुख करके बैठे। रात के समय यह प्रयोग करे और आलस्य छोड़कर सावधान होकर इस मन्त्र का जाप करे।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते महाकाल भैरवाय काला अग्नि तेज से अमुक दुश्मन मारय पोलय २ हुँ फट् स्वाहा।

यदि रात के समय सावधान होकर जप करे तो उन्तीस दिन में यह मारण प्रयोग सिद्ध होता है।

आर्द्र पट्टी विद्या

अथ तत्रादौ मन्त्र—ॐ नमो भगवती आर्द्र पटेश्वरी हरिते नीलपट काली आर्द्र चिन्ह चांडालिनी सदनी कपालिनी ज्वालामुखी सप्त जिह्वे सदस्य नयने ऐहि-ऐहि अमुकं पशुं ददामि अमुकस्य जावं विकृतय एहि तजी वितापहरणी हुँ फट् भूर्भुवः बंमल रुधिरात व सखामिनि मम दुश्मस न मरदत २ शोणितं पिव २ हूं फट् स्वाहा।

भावार्थ—श्री शंकर भगवान रावण से आर्द्रपटी विद्या का मन्तर—ॐ नमो भगवती इत्यादि जो है उसमें जहां अमुक है वहां वैरी का नामोच्चारण करे।

मन्त्र—ॐ अस्य आर्द्रपटी महाविद्या मन्त्रस्य दुर्वासा ऋषिः गायत्री छन्द हुँ बीजं स्वाहा शक्ति अमुक शत्रु निग्रहोर्थ जपे विनियोगः।

भावार्थ—प्रथम हाथ में जल लेकर ॐ अस्य श्री इत्यादि मन्त्र को पढ़कर पृथ्वी पर छोड़ देवें जहां अमुक

शब्द है वहां वैरी का नाम लेना चाहिए। यह विनियोग है, अब आगे विधान वर्णन करते हैं।

केवलं जप मंत्रेण एसान्ते शत्रु मारणाम्।
कृष्णाष्टमी समराभ्य वीसत्कृष्णा चतुर्दशा॥
दुश्मन सात्व सामायुश्ग मश तावज्येन्तरः।
रिपुपापस्थ मृल्याश्च कुर्याल्युत्तलि कांततु॥
अज पुत्र वलिं दत्व वस्त्रं रक्त न संलिपेत।
ततो गृहीत्वा तदवस्त्रं सावच्छ विध्वश्वरि॥
मन्तराज प्रभावेण मात्र कार्यं विचारणाम्॥

भावार्थ—ॐ अस्य इत्यादि मन्त्र का जप सिर्फ एक मास करने से दुश्मन मारण प्रयोग सिद्ध होता है यानी एक महीना तक नित्य प्रति १०८ बार मन्त्र का जाप करे। तदन्तर कृष्णपक्ष की अष्टमी से कृष्णपक्ष की चतुर्दशी तक वैरी के नाम सहित सावधानी से मन्त्र का जाप करे। १०८ बार नित्य प्रति सौ बार जपने के बाद अन्तिम दिन मारण प्रयोग इस तरह से करना चाहिए कि दुश्मन के पांव के नीचे की मिट्टी लेकर उसकी पुतली बना ले फिर नीचे वस्त्र से लपेट कर मन्त्र द्वारा प्राण प्रतिष्ठा करे और काली जी की पूजा करे। बकरे की बलि प्रदान करके उसके खून से उस वस्त्र को भिगो देवे फिर वस्त्र को लेकर पुतली को लपेट देवे और मन्त्र का

जाप करे। जब तक वह कपड़ा सूखेगा तब तक दुश्मन का नाश हो जाता है। इस मन्त्र से राजा से प्रभाव से मारण प्रयोग सिद्ध होता है इसमें कोई सन्देह नहीं है।

अथ बैरी मारण काली कवचम्

ॐ अस्य श्री कालिका कवचस्य भैरव ऋषिः गायत्री छन्दः श्री कालिका देवता सः बैरी संधि नाशे विनियोगः।

भवार्थ—अब दुश्मन विनाश करने में प्रबल काली चवच का वर्णन करता हूँ। पहिले हाथ में जल लेकर ॐ अस्य श्रीकालिका कवचस्य इत्यादि मन्त्र पढ़े और धरती पर छोड़ दे।

अथ ध्यानम्

ॐ ध्यायेत् कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपणीम्
चतुर्भुजां लोल जिह्वा पूर्णचन्द्र निभाननाम् ॥
नीलोत्पदलश्यामां बैरि संघ विदारिणीम्।
नरमुण्ड तथा खंड, कमलं च बरं तथा ॥
बिभ्राणाम् रक्त वस्त्रां ताकांघोरद्रंष्टास्वरूपणीम् ॥
निर्भयां रक्त बदना द्रंष्ट्राली घोर रूपिणीम्।
सोट्टहाननां देवीं सर्वदांच दिगम्बरीम् ॥
शवासन स्थितां देवी मुंडमाला विभूषिताम्।
इति धयात्वा महाकाली ततस्तू कवचं पठेत् ॥

भावार्थ—ऊपर लिखे हुए विनियोग को करने के पश्चात् श्री काली का ध्यान इस प्रकार करे कि जिसके तीन नेत्र बहुत विकराल रूप तथा चार भुजा चंचल व तृष्णा सहित जिह्वा पूर्ण चन्द्रमा के सामने मुखारविन्द नील कमल के समान श्याम वर्ण, दुश्मन दल को नष्ट करने वाली, चार भुजाओं से युक्त, एक हाथ में आदमी का सिर-दूसरे में खड्ग, तीसरे में कमल, चौथे में वरद को धारण किए हुए रक्त वस्त्रों पहिने विकट दांतों को निकाले भयानक स्वरूप अट्टहास करने वाली सदा दिशा रूपी कपड़े को धारण किए शव मुर्दा पर आसन लगाए बैठो मूंगे की माला से सुशोभित ऐसी महाकाली देवी का ध्यान करके आगे लिखे हुए कवच का पाठ करे।

अथ कवचम्

ॐ कालिका घोररूपा सर्व कामप्रदाशुभा।
सर्वदेवस्तुता देवी शत्रु नाशं करोतु मे॥
ह्रां ह्रीं ह्रूं स्यारूपिणी चैव ह्रीं ह्रीं ह्रीं संगिनी तथा।
श्रीं ह्रीं क्षौं क्षौं स्वरूगात्री शत्रु नाशिनी॥
श्रीं ह्रीं ऐं रूपिणीं देवी भवबन्ध विमोचनी।
यथा शुम्भो हतो दैत्यो निशुम्भश्च महासुर॥
वैरी नाशाय बन्दे तां कालिका शंकर प्रियाम्।
ब्राह्मी शैवी वैष्णवी च वाराही नरसिंहि का॥

कौमार्येंद्री च चामुण्डा खादन्तु ममद्वेषः।
सुरेश्वरी घोररूपा चंड मुण्ड विनाशिनी॥
मुण्डमाला धृतांगी च सर्वतः पातु मां सदा।

ह्रीं ह्रीं ह्रीं कालिके घोरे द्रंष्ट्रैव रुधिर प्रिये रुधिर पूर्णवक्त्रे च रुधिरेण वृतस्तानि मम्शतून खादय २ हिंसय हिंहस मारय मारय, भिंधि भिंधि, छिन्धि छिन्धि, उच्चाटय उच्चाटय, द्रावय द्रावय, शोषय शोषय, यातुधानां चामुंडे ह्रीं ह्रीं वांव कालि कायै क्रीं क्रीं कटि कटि मर्दय २ मोहय मोहय हर हर मम रिपूस ध्वंसय २ भक्षय भक्षय त्रोटय त्रोटय यातुधानान् चामुण्डे सर्व जानन् राजपुरुषान् राजश्चि ये देहि पूतन धान्यं जवच्छ जवच्छ क्षां क्षी क्षे क्षौं क्ष स्वाहा। इति कवचम्॥

यह काली कवच है इसको पढ़े, तब आगे कवच का महात्मय वर्णन करते हैं।

इतयेतां कवचं दिव्य कथित तब रावण।
ये पठन्ति सदा भक्तयातेषां नशयन्ति शत्रुषः॥
वैरिणः प्रलय यान्ति व्याधितावा भवन्तिह।
धनहीनाः पुत्र हींना शत्रवस्तस्य सर्वदा।
सहस्त्र पठनात्र सिद्धि सिद्धिः कवचस्य भवेत्तया।
गतः कार्याणि सिद्धयन्ति यथा शंकर भाषितम्॥

भावार्थ--यह काली वचन अतयन्त दिव्य है। इसे रावण ने वर्णन किया है। जो कोई इस कवच का पाठ भकित भाव से करेगा उसके शत्रु नाश हो जाएंगे। दुख से अनेक प्रकार पीड़ित होकर शत्रु नाश भाव को प्राप्त होते हैं उसके वैरी सब दीन धनहीन, पुत्रहीन रहते हैं। यह कवच भक्ति से १००० बार जपने से सिद्ध होता है श्री शंकर भगवान कहते हैं कि यह हमारा वचन झूठा नहीं हो सकता।

श्मशानांगारमादाय चूर्णं कृत्वा विधानताः।
पादोदकेन पिष्ट्वां च लिखेल्लौह शलाकया॥
भूमौ शत्रुन हीन रूपा नुत्तरा सिर शस्तथा।
हस्त दतवा तद्धृदये कवचं तू स्वयं पटेत्॥
शत्रोः प्राण प्रतिष्ठातु कुर्यात मंत्रेण मंत्रिभिः।
हन्यादस्त्र प्रहारेण शत्रोगच्छ यमक्षयम॥
ज्वलदङ्गार तापेन भवति ज्वरितो भृशम।
प्रोक्षणा वामपादेन दरिद्रो भवति धुरुवम॥

भावार्थ—श्मशान में जाकर वहां से कोयला (अंगार) विधि-पूर्वक ले आवे फिर उसे चरणों के जल से पीसकर लोहे की कलम से लिखे। पृथ्वी पर वैरी की मूर्ति बना

कर लोहे की कलम से उस मूर्ति का काट कर उसे उत्तर की ओर मुख कर शयन कर देवे। ततपश्चात् उसकी छाती पर अपना हाथ रखकर कवच को पढ़े और मन्त्र का जानने वाला मनुष्य मन्त्र से प्राण प्रतिष्ठा करे इससे साधन वैरी अवश्य दरिद्र हो जाता है।

वैरीनाशकरं प्रोक्तं कवचम वश्यकारकम।
परमैश्वर्यदं चैव पुत्र पोत्रादि वृद्धिदम॥
सायंकाले तथा पाठात सर्वसिद्धि भवेत।
प्रभात समय चैव पूजा काले प्रयानतः॥
सायंकाले तथा पठातसर्वसिद्धि भवेधुरुवम।
शत्रु रुच्चाटनयाति देशात वोविच्युतो भवेत्॥
पश्चातकिंकर तामेतिसतयमेवं न संशयः।

भावार्थ—यह कवच दुश्मनों का नाश करने वाला तथा सबों को वश में करने वाला है। परम ऐश्वर्य दाता तथा पुत्र पौत्र इत्यादि को बढ़ाने वाला है, प्रातः काल (पूजा के समय में) तथा सायं काल में यन्त्र पूर्वक पाठ करने से सब प्रकार की सिद्धि निश्चय प्राप्त होती है। इस कवच के पाठ करने से दुश्मन को उच्चाटन होता है तथा वह देश से निकल कर भाग जाता है अथवा पीछे से दास बन जाता है, इसमें कोई संदेह नहीं हैं।

॥ इति मारण प्रयोग आर्दपटी विद्या सम्पूर्णम् ॥

यन्त्रों के प्रयोग

तन्त्र शास्त्र में यन्त्रों के प्रयोग का महत्त्व बहुत अधिक कहा गया है। विभिन्न कामनाओं की सिद्धि के लिए विभिन्न प्रकार के यन्त्रों का साधन किया जाता है।

इन्द्रजाल के इस प्रकरण में हम २० प्रकार के विभिन्न कामनाओं के देने वाले यन्त्रों का वर्णन कर रहे हैं। इन यन्त्रों को प्राचीनतम ग्रन्थों से संकलित किया गया है और तान्त्रिकों की मान्यता के अनुसार ये सभी यन्त्र विशेष प्रभावकारी हैं।

यन्त्रों का साधन सदैव ही शुभ दिन तथा शुभ तिथि में करना चाहिए। जिन यन्त्रों के साथ दिन का उल्लेख किया गया है उनका साधन उन्हीं दिनों में करना चाहिए।

यन्त्रों के साधन को यथाविधि करना अत्यन्त आवश्यक है। किसी भी क्रिया में तनिक सी भी चूक जाने पर यन्त्र निष्फल हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त यन्त्र साधन के समय मन, वचन तथा शरीर से पवित्र रहना,

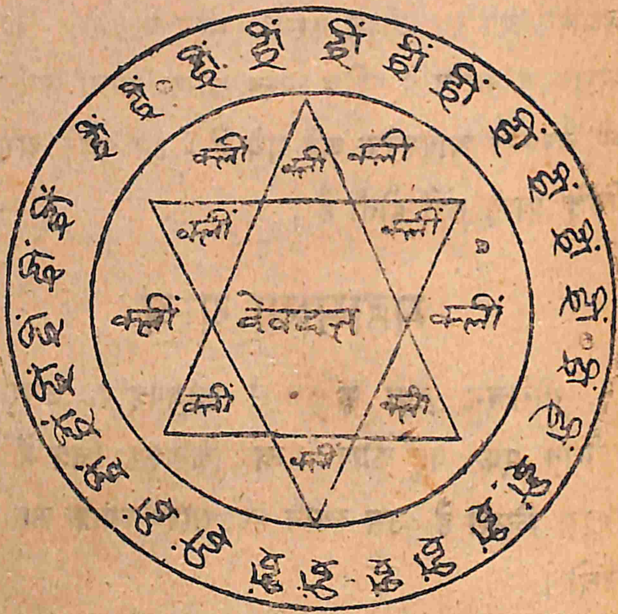
ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना, सत्य बोलना, किसी का अशुभ न करना व पवित्र वस्त्र धारण करना आदि कार्य भी अत्यन्त आवश्यक कहे गये हैं। इन सबके अभाव में सिद्धि प्राप्त नहीं होती है।

महामाया यन्त्र

गोरोचन तथा कुंकुम से भोजपत्र के ऊपर आगे प्रदर्शित एक बहु कोण यन्त्र लिखकर चित्र में जहां देवदत्त लिखा है उस स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखो।

यन्त्र लेखनेपरान्त सात दिन तक विधि पूर्वक यन्त्र का पूजन करके भगवती महामाया देवी का पूजन करें तथा मार्कण्डेय पुराण में वर्जित देवी महामाया (दुर्गा शप्तशती) का सात दिन तक जप करें।

फिर खीर घी और शहद इन द्रव्यों से दुर्गा सप्तशती के प्रत्येक श्लोक से आहुति देते हुये पुर्णाहुति से हवन करे और अन्त में तीन कन्याओं को भोजन कराने के बाद यन्त्र को त्रिलोह (सोना, चांदी और तांबा) के



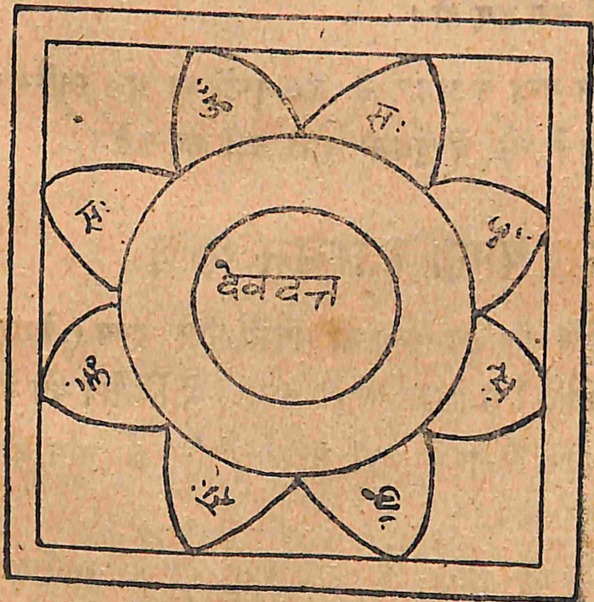
तावीज में भर कर कन्धे अथवा कण्ठ में धारण करे ऐसा करने से धनी व्यक्ति यन्त्र धारण कर्त्ता के वशीभू हो जाता है यदि उसने यन्त्र धारण करने वाले क ऋण दे रखा होता है तो उसका तकाजा करना बन्द क देता है इतना ही नहीं वह उसे व्यावसाय आदि कर के लिये और भी अधिक धन देता है।

जो व्यक्ति किसी धनी व्यक्ति से ऋण ले चुका

और उस धनी व्यक्ति के बारम्बार तकाजा करने के कारण परेशान हो तो उसे यन्त्र अवश्य धारण करना चाहिए। यह अत्यन्त चमत्कारी यन्त्र।

दुष्ट मोहन यन्त्र

अपने शरीर के रक्त से भोजपत्र के ऊपर नीचे प्रदर्शित मन्त्र का निर्माण करे तथा मन्त्र के बीच में



(दुष्ट मोहन यन्त्र)

जहां 'देवदत्त' लिखा है वहां साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

निर्माण उपरान्त इस यन्त्र का विधिपूर्वक पूजन करे फिर इसे २१ दिन तक दूध में स्थापित करके रक्खे।

इस यन्त्र का प्रयोग उस समय करना चाहिए जब राजकुल में रहने वाले चुगल खोर पुरुष प्रतिदिन घात करने में लगे हुए हों।

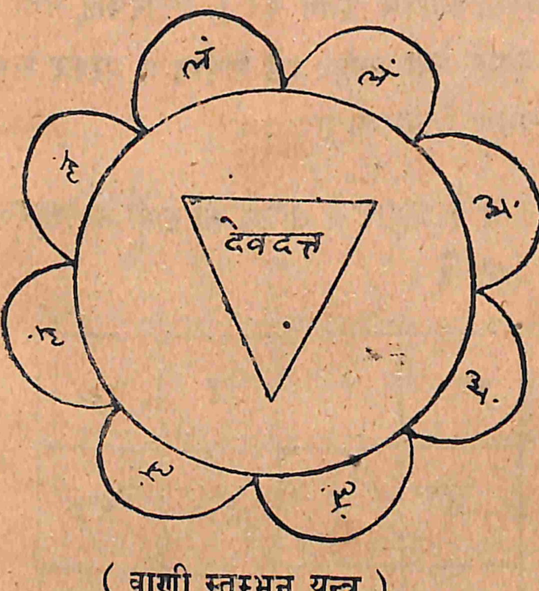
इस यन्त्र के प्रभाव से उन दुष्टों का मुख स्तम्भित हो जाता है और वे चुगली आदि नहीं कर पाते।

वाणी स्तम्भन यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को किसी पीले द्रव्य (केशर हल्दी आदि) से शिला सम्पुट के मध्य में लिखो। यंत्र में जहां देवदत्त लिखा है वहां साध्य व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिये।

मन्त्र को लिखने के बाद पीले रंग के सुगन्धित पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से यन्त्र का पूजन करें।

त्पश्चात् खीर तथा गुड़ मिश्रित पदार्थों से एक ब्राह्मण
भोजन कराके यन्त्र पृथ्वी के भीतर एक गड्ढा खोद-
र गाड़ दें तथा उसे मिट्टी से भर दें।



(वाणी स्तम्भन यन्त्र)

इस यंत्र के प्रभाव से व्यवहार, विवाद, शास्त्र चर्चा,
दमा आदि में प्रतिवादियों के मुख स्तभित हो जाते हैं
यंत्र के साधक को उन पर विजय प्राप्त होती है।

प्रतिवादी का मुख स्तम्भन करने के लिये यह यन्त्र
न्त प्रभाव शाली है।

मनोभिलाषा पूर्ति यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर यथाविधि पूजन करे। तत्पश्चात् यन्त्र को हर समय अपने पास रक्खे। इसे तावीज में भरकर अथवा भुजा में धारण किया जा सकता है।

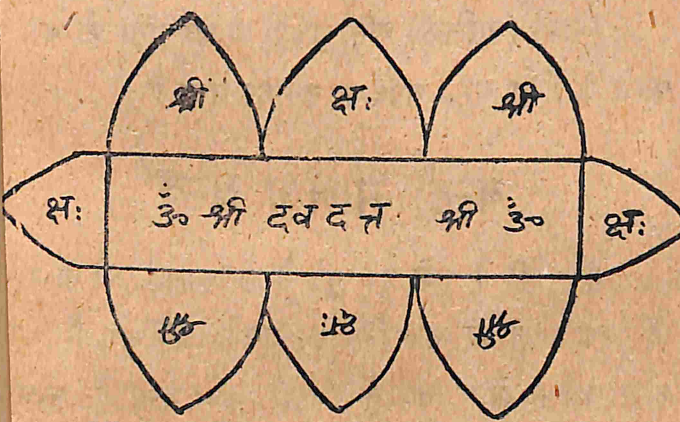
इस यन्त्र के प्रभाव से साधक की सभी मनोकामनायें पूर्ण होती रहती हैं।

६६	१०	२	८
०	३	६०	६०
५०	४५	६	१
७	६	६५	६८

(मनोभिलाषा पूर्ति यन्त्र)

स्वामी वशीकरण यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखे यन्त्र के बीच में जिस स्थान पर देवदत्त लिखा है वहां साध्य व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिये।



(स्वामी वशीकरण)

यन्त्र लिखने के बाद उसे शराव सम्पुट में (मिट्टी के दो सकोरों के बीच में रखकर) दोनों के मुख मिलाकर

भीगी मिट्टी से कपड़े में लपेट कर उसको चारों ओर से बन्द करके अग्नि में पुटित करे (पकाये) । जब वह ठण्ड हो जाये तब यन्त्र की भस्म को स्वयं पान करे अर्थात् पानी मिलाकर दी जाय ।

इस प्रयोग के करने से साध्य व्यक्ति जीवन भ साधक के वशीभूत बना रहता है ।

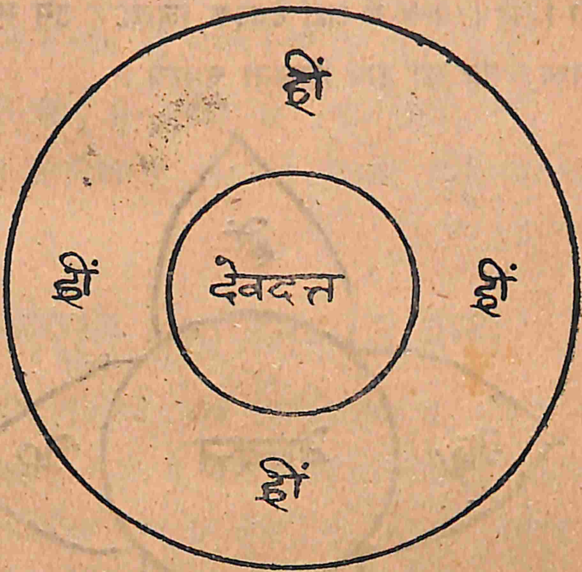
स्वामी (मालिक) पति अथवा आश्रयदाता को वश करने के लिए यन्त्र सर्वश्रेष्ठ बताया गया है ।

बन्दी मोक्षण यन्त्र

शुद्ध घी में तले हुये पुये के ऊपर शुद्ध घी के द्वा ही एक गोलाकर चक्र लिखकर उसके बहिर्भाग में ए और चक्र लिखे। चक्र के भीतर मध्य भाग में साध्य व्यक्ति का नाम तथा दूसरे चक्र के भीतर पूर्वादि चा भागों में 'ह्रीं' बीज मन्त्र लिखना चाहिए ।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा उसे आ प्रदर्शित किया गया है । प्रदर्शित यन्त्र में जहां देव

लिखा है। उस स्थान पर साध्य व्यक्ति अर्थात् बन्दी का नाम लिखना चाहिये।

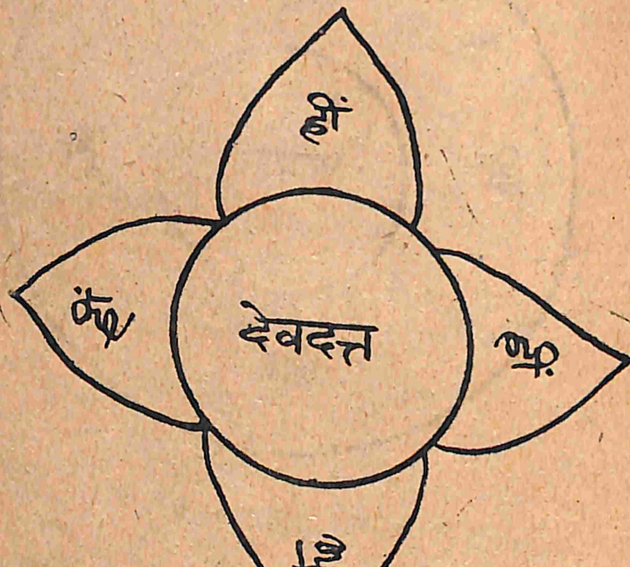


(बन्दी मोक्षण यन्त्र)

यन्त्र लिखने के बाद उसका गन्ध पुष्पादि से पूजन करे। फिर वह पुआ साध्य व्यक्ति अर्थात् बन्दी को लिखा दे। इस यन्त्र के प्रभाव से साध्य व्यक्ति अर्थात् बन्दी तीन या सात दिन के भीतर ही बन्धन से छूट जाता है।

पिशाचि यन्त्र

भोजपत्र के ऊपर गोरोचन द्वारा नीचे प्रदर्शित यन्त्र को लिखे। यन्त्र में जहां देवदत्त लिखा है उस स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिये।



(पिशाचि यन्त्र)

नाम लिखने के बाद यन्त्र का पुष्पादि से पूजन करके उसे उसी के भीतर रख देना चाहिये।

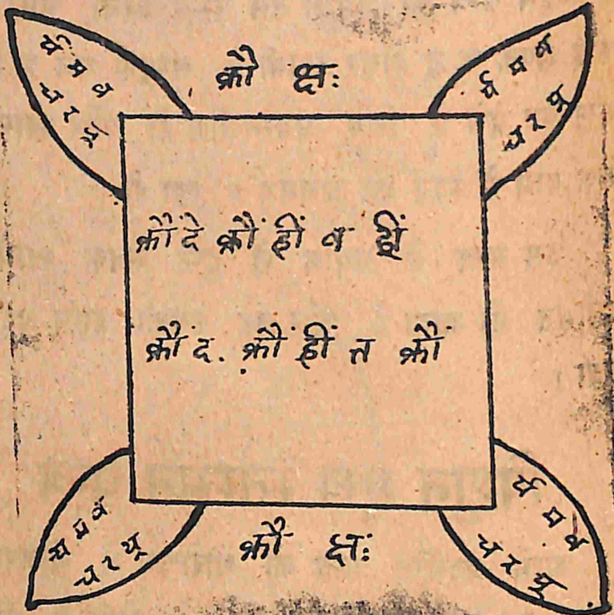
इस यन्त्र का प्रयोग उस समय करना चाहिये जब कोई सेवक क्रुद्ध होकर स्वामी के सम्पूर्ण धन आदि को नष्ट कर देने के लिए प्रयत्नशील हो और स्वामी उसे रोक पाने में स्वयं को असमर्थ पा रहा हो।

इस यन्त्र के प्रयोग से दुष्ट सेवक स्वामी के वशीभूत हो जाता है और वह उसकी हानि नहीं कर पाता।

पिशुन मुख स्तम्भन यन्त्र

आगे प्रदर्शित यन्त्र को गोरोचन से भोजपत्र के ऊपर लिखे। यन्त्रों के मध्य में क्रीं ह्रीं बीजों से संयुक्त साध्य व्यक्ति के नाम के अक्षरों को लिखना चाहिए। साध्य-व्यक्ति के नाम में जितने अक्षर हों, उसी के अनुसार क्रीं ह्रीं बीजाक्षरों की संख्या को घटाया या बढ़ाया जा सकता है।

यंत्र को लिखने के बाद लाल चन्दन, लाल पुष्प लाल वस्त्र तथा अपने शरीर के रक्त से मन्त्र का पूजन करना चाहिये तथा एक ब्राह्मण को भोजन करा उसे यथा



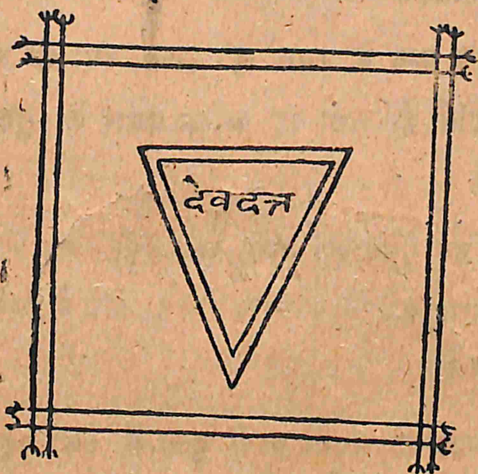
शक्ति दक्षिणा देनी चाहिये। इस कार्य में धन की कृपणता नहीं करनी चाहिये।

इसके बाद भूमि में गड्ढा खोदकर उसमें यन्त्र को गाढ़कर मिट्टी से दबा देना चाहिये।

इस यन्त्र के प्रभाव से चुगल खोर शत्रु की वाणी बुद्धि तथा मति का अवरोधन होता है पिशुन अर्थात् चुगल खोर व्यक्ति का मुँह बन्द करने के लिए यह अत्युत्तम यन्त्र है।

वन्ध्या गर्भ-धारण यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को गोरोचन, कुंकुम, कपूर तथा कस्तूरी द्वारा चमेली की कलम से भोजपत्र के ऊपर लिखकर मध्य भाग में जहां देवदत्त लिखा है, वहां साध्य व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिये।



(वन्ध्या गर्भ-धारण यन्त्र)

लेखनोपरान्त यन्त्र का श्वेत तथा नील कमल, जुही और कमल पुष्पों से पूजन करे। लाल ंग के बिना गन्ध के फूलों को नहीं लेना चाहिए। इसके

अतिरिक्त ऋतुफल, कपूर युक्त ताम्बूल, धूप, दीप, गंध, श्वेत वस्त्र नैवेद्य आदि से भी यन्त्र का पूजन करना चाहिये।

पूजन के बाद यन्त्र को त्रिलोह (सोना, चाँदी और तांबा) के तावीज में भरकर भुजा अथवा कण्ठ में धारण करना चाहिये।

इस यन्त्र के प्रभाव से वन्ध्या स्त्री को भी सन्तान प्राप्त होती है तथा वह अनेक प्रकार के सुख सौभाग्य पाती है।

जिस पुरुष की पत्नी वन्ध्या हो, वह भी इस यन्त्र को धारण करें तो वन्ध्यत्व दोष दूर होने में विशेष सफलता मिलती है।

स्त्री को अपनी बायीं भुजा में तथा पुरुष की दायीं भुजा में यह यन्त्र धारण करना चाहिये।

यह यन्त्र वन्ध्यापन के दोषों को दूर करने वाला तथा स्त्री-पुरुषों को दुर्भाग्य को नष्ट कर सौभाग्य को देने वाला है।

राज-सम्मान प्राप्ति यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को कपूर तथा कस्तूरी से भोज-पत्र के ऊपर लिखकर धूप, दीप, पुष्प, आदि से यथा विधि पूजन करे। तत्पश्चात् त्रिलोह (सोना, चाँदी, तांबा) के ताबीज में भरकर अपनी दायीं भुजा अथवा कण्ठ में

४३	५०	२	७
६	३	४०	४८
४६	४४	८	१
४	५	४५	४७

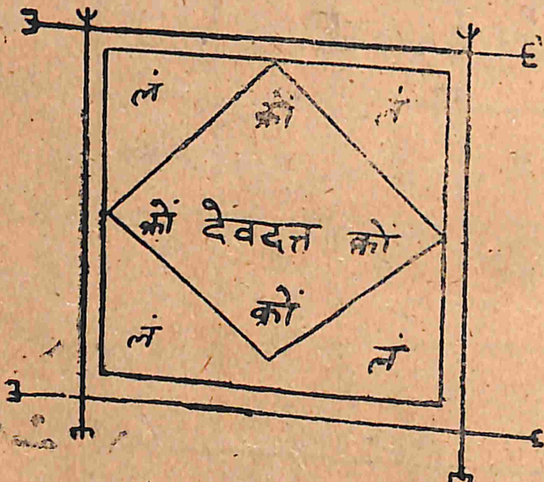
(राज-सम्मान प्राप्ति यन्त्र)

धारण करके राजसभा में जाय तो यन्त्र धारण करने वाले व्यक्ति को वहां पर सम्मान प्राप्त होता है।

इस यन्त्र को यदि स्त्रियां धारण करें तो उन्हें भी सुख, सौभाग्य तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

अग्नि स्तम्भन यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को किसी पीले द्रव्य (केशर आदि) से भोजपत्र के ऊपर लिखकर यन्त्र के बीच में जहां 'देवदत्त' लिखा हुआ है, वहां गृह स्वामी अथवा साध्य व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।



(अग्नि स्तम्भन यन्त्र)

लेखनोपरान्त गन्ध, पुष्प आदि से यन्त्र का पूजन करके यथा शक्ति ब्राह्मणों को भोजन कराये। तत्पश्चात् यन्त्र को पृथ्वी के भीतर गड्ढा खोदकर गाढ़ दे।

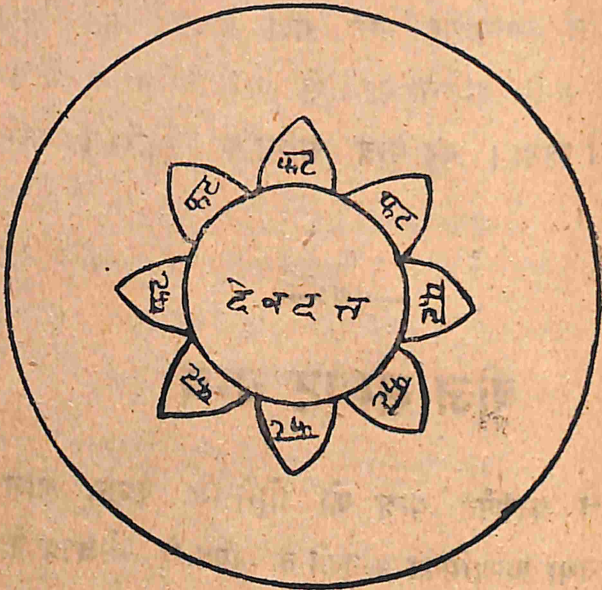
जिस स्थान पर यन्त्र गढ़ा हुआ है उस जगह तिदिन पानी डालते रहने से वहां अग्नि लगने का य नहीं रहता। यह यन्त्र अग्नि को स्तम्भित करने ला है।

--:※:--

बीज सम्पुट यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को गोरोचन, केशर, लाल न्दन तथा अनामिका अंगुली के रक्त से भोजपत्र के पर लिखे। यन्त्र के मध्य में जहां देवदत्त लिखा हुआ, वहां साध्य व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

इस यन्त्र का प्रयोग तब करना चाहिए जब राजा त्यन्त क्रुद्ध होकर अर्थ दण्ड अथवा कारागर का दण्ड ने पर उतारू हो। इस यन्त्र को लिखकर पुष्प, धूप, प, नैवेद्य आदि शुभ द्रव्यों से पूजन कर, कुमारी कन्या थवा सुहागिन ब्राह्मणी को नमस्कार करके भोजन रना चाहिये। फिर इस यन्त्र को मुट्ठी में दबाकर



(बीज सम्पुट यन्त्र)

राज दरबार में जाने से राजा का क्रोध तुरन्त शान्त हो जाता है।

द्यूत विजय यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र जो अष्टगंध से भोजपत्र के ऊपर लिखकर धूप दे तथा पुष्प आदि से शिव पूजन कर त्रिलोह (सोना, चाँदी, तांबा) के ताबीज में भरकर अपनी दायीं भुजा में धारण करके जुआ खेलने के लिए

जाय तो यन्त्र धारण करने वाला व्यक्ति जुआ में विजय प्राप्त करता है, कभी हारता नहीं है।

यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है—

१	२५।	२३।	२१।
३२।।।	२७।।	३५।।	३६।।
१।।	८	२४।।	१६।।
२६।	१।।	५।।।	४।।

(द्यूत विजय यन्त्र)

जुआ खेलने के लिये जाने से कुछ समय पूर्व ही इस यन्त्र को अपनी भुजा में बांधना चाहिये।

सर्व कार्य सिद्धि यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को कागज के ऊपर हल्दी से लिखकर उसके नीचे अपना मनोरथ लिख दे। फिर इस

यन्त्र का पलीता बनाकर रविवार के दिन दीपक में जलाये।

इसी प्रकार सात रविवार तक यही क्रिया करे। इस यन्त्र के निर्माण के साथ ही हल्दी की माला से 'ॐ श्री सिद्ध सः' इस मन्त्र का ११ माला की संख्या में जप भी करना चाहिये।

८	६	२	७
४	६	१२	११
१४	३	१२	११
४	३	१०	११

(सर्व कार्य सिद्धि यन्त्र)

इस यन्त्र के साधन की दूसरी विधि यह है कि रविवार को प्रातःकाल स्नान करने के बाद कांसी की थाली में इस यन्त्र को लिखे। फिर उस थाली में खड़ी बत्ती का चौमुखा घी का दीपक जलाकर, थाली को हाथ में लेकर सूर्य के सामने रक्खे तथा उपर्युक्त मन्त्र का

जप करता जाय। जैसे-जैसे सूर्य आकाश में घूमे वैसे २ स्वयं भी पृथ्वी पर खड़ा हुआ घूमता जाय। सूर्यास्त हो जाने पर अर्घ्य देकर व्रत को समाप्त करे।

इस सम्पूर्ण क्रिया में साधक के ऊपर किसी स्त्री की दृष्टि नहीं पड़नी चाहिये।

इस विधि से ७ रविवार तक साधन करने से साधक की सभी इच्छायें पूरी होती हैं। यह यन्त्र चमत्कारी फल देने वाला कहा गया है।

जामदग्न्य यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को गोरोचन द्वारा ताड़ पत्र के ऊपर लोहे के कांटे से सोमवार के दिन लिखे। यन्त्र के मध्य में जहां 'देवदत्त' लिखा है उस स्थान पर साध्य व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

लिखने के बाद यन्त्र को कुम्हार के चाक की मिट्टी में रखकर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुये धूप, दीप, गन्ध आदि से पूजन करना चाहिए।

मन्त्र इस प्रकार है—

अक्रोधो सत्यवादी च जगदग्निर्दृढव्रतः ।
रामस्य ज्ञान की साक्षात् सर्वमूर्त्ते नमोस्तुते ॥

इस प्रकार सात दिन तक क्रोध को नष्ट करने वाले इस जामदग्न्य यन्त्र का पूजन करे। तत्पश्चात् किसी वेदज्ञाता श्रेष्ठ ब्राह्मण का पूजन कर, उसे भोजनादि से तृप्त करे। भोजन में दही तथा चावल परोसना आवश्यक है।

ह्रीं ह्री ह्रीं ह्रीं

ह्रीं देवदत्त ह्रीं

ह्रीं ह्री ह्रीं ह्रीं

(जामदग्न्य यन्त्र)

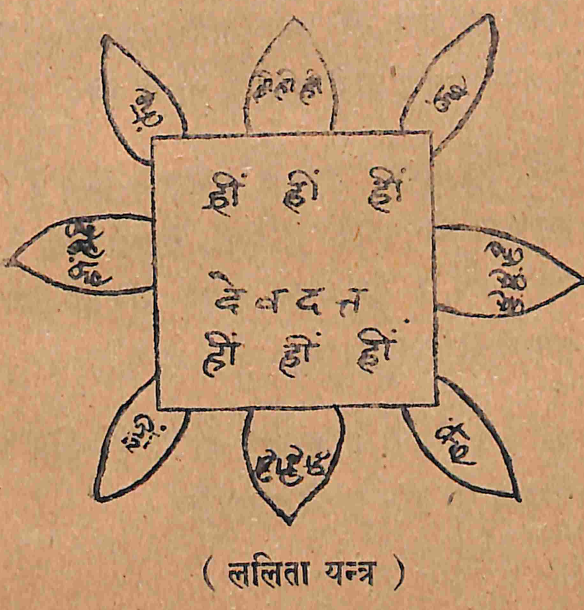
इस प्रकार का भोजन कराने से जब ब्राह्मण तृप्त हो जाय तब समझना चाहिए कि मनोकामना पूर्ण होगी।

मित्र, बन्धु अथवा किसी शत्रु के क्रुद्ध हो जाने पर इस यन्त्र प्रयोग करना चाहिए।

यह यन्त्र क्रोध को दूर करके प्रसन्नता प्रदान कराने वाला तथा अत्यन्त प्रभावशाली है।

ललिता यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को गोरोचन, कुंकुम, कस्तूरी तथा लाल चन्दन इन चारों वस्तुओं के द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखे। यन्त्र मध्य में जहाँ देवदत्त लिखा है, वहाँ साध्य व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।



(ललिता यन्त्र)

यन्त्र लिखने के बाद कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को रात्रि के समय पूर्वक त्रिविध प्रकार के भोग तथा गंध आदि से यन्त्र का पूजन कर सात सौभाग्यवती स्त्रियों को भोजन कराता रहे। तत्पश्चात् निम्नलिखित वक्ष्यमाण मन्त्र का उच्चारण करते हुए विसर्जन करे।

शंकरस्य प्रिये देवि ललिते प्रीयतामिति।
रूपंदेहि यशोदेहि सौभाग्यं देहि मे प्रियम्॥
भगवति वाञ्छितं देहि प्रियमायुष्यवर्धनम्।

फिर इस यन्त्र को धातु निर्मित्त तावीज में भरकर अपने कण्ठ अथवा बांयीं भुजा में धारण करे।

यह यन्त्र केवल स्त्रियों के प्रयोग के लिये है। जो स्त्री इस यन्त्र को पूर्वोक्त विधि से धारण करती है वह सौभाग्य व रूप से युक्त होकर अपने पति की अत्यन्त प्रिय बन जाती है।

यह यन्त्र स्त्रियों के दुर्भाग्य को नष्ट करने वाला तथा सौभाग्य की वृद्धि कराने वाला है।

मदनमर्दन यन्त्र

भोजपत्र के ऊपर मदन काष्ठ की कलम से घोड़े के रक्त द्वारा नीचे प्रदर्शित यन्त्र को लिखे।



(मदनमर्दन यन्त्र)

यन्त्र के मध्य भाग में ही बीज से सम्पुटित सा व्यक्ति के नामाक्षरों को अलग-अलग लिखे।

यन्त्र निर्माण के पश्चात् मदन काष्ठ से कामदेव की एक ऐसी प्रतिमा का निर्माण करे जिसके हृदय में एक ऐसा छिद्र हो, जिसमें यन्त्र को सुविधापूर्वक रखा जा सके।

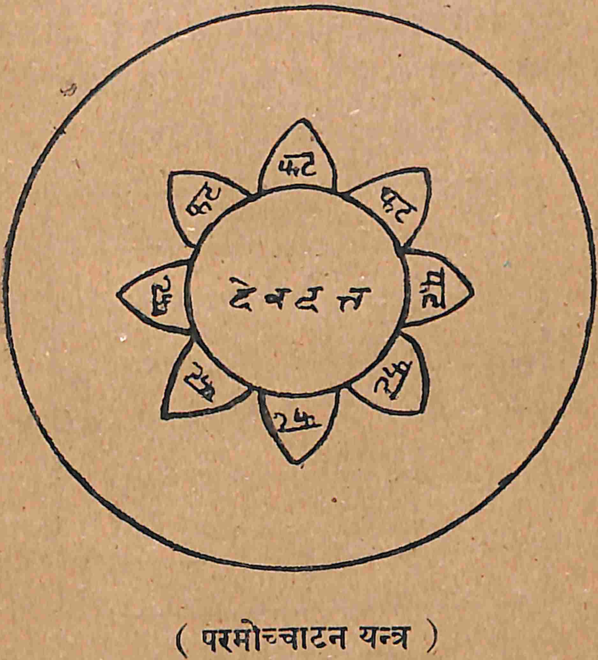
फिर यन्त्र का लाल चन्दन तथा पुष्प आदि शुध वस्तुओं से पूजन करे तथा यन्त्र को उक्त प्रतिमा के हृदय में स्थापित कर इक्कीस दिन तक पूजन करता रहे। पूजन करते समय जिस साध्य स्त्री को वश में करना हो, उसका ध्यान करता रहे।

इस मदनमर्दन यन्त्र की साधना से अभिलषित स्त्री साधक के वशीभूत हो जाती है। यन्त्र साधन अवधि में पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना चाहिए।

पृथ्वी पर शयन तथा हल्का भोजन करना चाहिए। अशुभ कार्य तथा अपवित्रता से बचाव रखना चाहिए। पवित्र वस्त्रों को धारण करना तथा विधि पूर्वक प्रतिमा का पूजन करना आवश्यक है।

परमोच्चाटन यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को हल्दी के वृक्ष के रस से भोजपत्र के ऊपर लिखे। यन्त्र के बीच में जहां 'देवदत्त' लिखा हुआ है वहां साध्य व्यक्ति के नाम को लिखे।



(परमोच्चाटन यन्त्र)

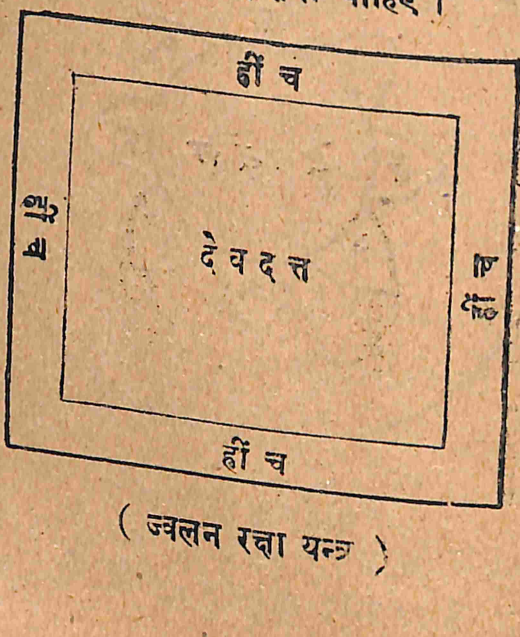
यह देखनोपरांत धूप-दीप आदि से यन्त्र का

विधिवत् पूजन करे। तत्पश्चात् यन्त्र का चूर्ण करके किसी खाने-पीने की वस्तु के माध्यम से यन्त्र के चूर्ण को साध्य व्यक्ति के उदर में पहुँचा दे।

इस प्रयोग से साध्य व्यक्ति का परम उच्चाटन होता है और वह साधक की इच्छानुसार उस स्थान को छोड़कर दूर चला जाता है।

ज्वलन रक्षा यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को धतूरे के रस से भोजपत्र के ऊपर लिखे। यन्त्र के मध्य में जहां देवदत्त लिखा है वहां साध्य व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।



(ज्वलन रक्षा यन्त्र)

यन्त्र लेखनोपरान्त धूप, दीप, नैवेद्य आदि से यन्त्र का पूजन करें फिर त्रिलोह (सोना, चाँदी और तांबा) के तावीज में भरकर यन्त्र को बालक के गले में बांध दीजिए।

इस यन्त्र के प्रभाव से बालक के उपसर्ग जनित रोग, शारीरिक रोग, मानसिक रोग, दांतों के रोग, स्तन रोग, ज्वर ईर्ष्या, क्रोध आदि सभी शिकायतें दूर हो जाती हैं।

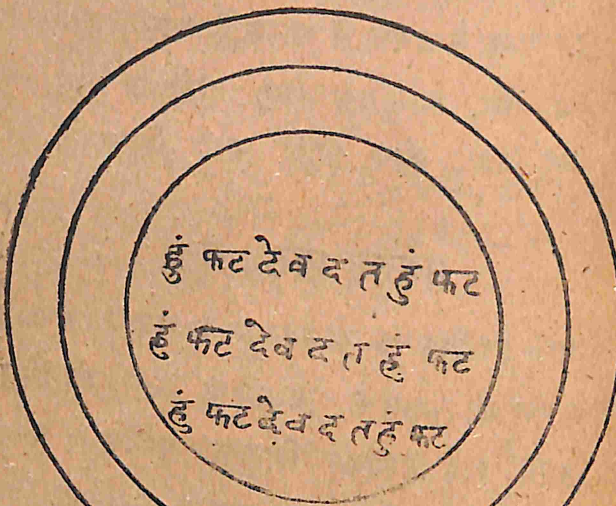
सर्वजन मारण यन्त्र

आगे प्रदर्शित यंत्र को श्मशान के वस्त्र कफन के ऊपर कौए के पंख की कलम से श्मशान के अंगारे को घिसकर तथा उसमें विष मिलाकर लिखना चाहिए। यन्त्र के मध्य में जहां-जहां देवदत्त लिखा है वहां-वहां साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र को लिखने के बाद शत्रु के पांव के नीचे की धूल को राई के चूर्ण में मिलाकर एक प्रतिमा बनाये फिर उस प्रतिमा के हृदय में इस यन्त्र को स्थापित कर दे।

इस यन्त्र के प्रभाव से शत्रु के शरीर में दाह तथा

व्याधि उत्पन्न होगी और तीसरे दिन मस्तिष्क में घोर पीड़ा होगी। तदुपरान्त हाथ पांवों में दर्द होकर सातवें दिन मृत्यु हो जायेगी।



यन्त्र निर्माण के वाद बलि युक्त पूजन सामग्री तथा अपने शरीर के रक्त से यन्त्र की पूजा अवश्य करनी चाहिए।

तीसरा प्रकरण

तान्त्रिक प्रयोग

तन्त्र शास्त्र में विभिन्न कामनाओं को सिद्ध करने ाले अनेक प्रकार के तान्त्रिक प्रयोगों का वर्णन किया या है। उनमें से कुछ ऐसे प्रयोगों का इस अध्याय में र्णन किया जा रहा है जिनके लिए किसी मन्त्र को जपने थवा यन्त्र आदि का पूजन करने की आवश्यकता नहीं ड़ती। यह प्रयोग केवल मात्र कुछ वस्तुओं के यथा-धि व्यवहार करने से ही साधक की मनोभिलाषा पूर्ण करते हैं। वशीकरण के प्रयोग निम्नलिखित

—

सर्वजन वशीकरण तिलक

अपामार्ग (औंगा), भांगरा, लाजवन्ती और सहदेई चारों वस्तुओं को सिल पर पीसकर अपने मस्तक पर क लगाकर साधक जिस साध्य व्यक्ति के समक्ष जा ता है, वह उसे देखते ही वशीभूत हो जाता है।

सर्वजन वशीकरण बन्धन

भरणी अथवा पुष्य नक्षत्र में चम्पा की कली को लाकर अपने दायें हाथ में बांध ले। फिर जिस साध्य व्यक्ति के सामने पहुंचे, वह देखते ही वशीभूत हो।

उक्त नक्षत्रों में यदि सुदर्शन की जड़ को लाकर हाथ में बांध लिया जाय तो उसका प्रभाव भी ऐसा ही होता है।

सर्वजन वशीकरण तिलक

मैनसिल, गोरोचन तथा मुस्ता की जड़ को पानी में पीसकर अपने मस्तक पर तिलक करे। तिलक लगाते समय साध्य व्यक्ति के नाम का उच्चारण करे। फिर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के पास पहुँच जाय तो उसे देखते ही वशीभूत हो जाता है।

सर्वजन वशीकरण तिलक

मुस्ता की जड़ को चन्दन में मिलाकर अपने मस्तक पर तिलक करके साध्य व्यक्ति के पास जाय तो देखते ही वशीभूत हो जाता है।

सर्वजन वशीकरण तिलक

चन्दन तथा बरगद की जड़ को पानी में पीसकर उसमें सम भाग विभूति (भस्म) मिलाये, फिर उसके मस्तक पर तिलक करके साध्य व्यक्ति के पास जाय तो वह देखते ही वशीभूत हो जाता है।

वशीकरण मन्जन

छुई मुई, चिरचिटे की जड़, बहेड़ा, अपराजिता (विष्णुक्रांता) तथा चांडाली (एक विशेष प्रकार की लता) इन सबको इकट्ठा करके दूध के साथ पीसकर गाढ़ा लेप तैयार करे। फिर उस लेप को एक रेशमी वस्त्र पर लेप कर उसकी बत्ती बनाये तथा बत्ती को कमल नाम के भीतरी सूत्र द्वारा वेष्टित करे, फिर एक वर्ण (रंग) वाली गाय के दूध से घी निकाल कर उस घी में उक्त बत्ती को गीला करके दीपक में जलाये तथा उस दीपक की लौ से काजल पारे। काजल पारने का कार्य कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की रात्रि में भैरव का पूजन करने के पश्चात् करना चाहिये।

इस काजल को अपनी आंखों में लगाकर साधक जिस अभिलषित स्त्री अथवा पुरुष के सामने पहुँचता है। वह उसे देखते ही वशीभूत हो जाता है।

तन्त्र शास्त्रों में वशीकरण की इस क्रिया को अत्यन्त श्रेष्ठ तथा फलदायक बतलाया गया है।

वशीकरण मन्त्र

तगर, कूठ, हरताल तथा केशर इन सबको सम भाग लेकर अपनी अनामिका अंगुली के रक्त में पीसकर फिर उसके लेप का अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के सामने पहुँचे तो वह देखते ही वशीभूत हो जायेगा।

वशीकरण तिलक

घीग्वार (ग्वारपाठा) के कन्द में भांग के बीज पीसकर अपने मस्तक पर तिलक लगाये, फिर जिस साध्य व्यक्ति के सामने पहुँचे, वह देखते ही वशीभूत हो।

वशीकरण तिलक

उदुम्बर की जड़ को पीसकर तिलक लगाने से भी उसका वशीकरण होता है।

वशीकरण बन्धन

पुष्य नक्षत्र में पथरचटा की जड़, रूपवन्ती और ओंगा की जड़ इन सबको लाकर क्वारी कन्या के काते हुए सूत में लपेट कर पुरुष अपने दायें हाथ में तथा स्त्री के बायें हाथ में बांधकर जिस साध्य-व्यक्ति के सामने जा पहुँचे, वह उसे देखते ही वशीभूत हो जाता है।

राजा वशीकरण प्रयोग

पुष्य नक्षत्र में अपमार्ग (चिरचिटा) के बीज लेकर उन्हें भोजन अथवा पान के साथ मिलाकर राजा को खिला पिला दे तो राजा उस खिलाने वाले व्यक्ति के वशीभूत हो जाता है।

सर्वजन वशीकरण अन्जन

चन्द्र ग्रहण के समय सफेद सरफोका की जड़ को विधि-पूर्वक उखाड़ लाये। फिर उसे पानी के साथ पास-कर उस लेप का आंख में अंजन करके जिस साध्य व्यक्ति के सामने पहुँचे, वह देखते ही वशीभूत हो जाए।

वशीकरण प्रयोग

पुष्य नक्षत्र में पुनर्नवा की जड़ लाकर अपनी दायीं भुजा में बांधकर जिस-जिस अभिलषित व्यक्ति के सामने पहुँचगा, वह देखते ही वशीभूत होगा।

वशीकरण तिलक

बेलपत्र तथा मातुलुंग को बकरी के दूध में घिसकर मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य-व्यक्ति के सामने पहुँचने से श्रेष्ट वशीकरण होता है।

वशीकरण धूप

वच, रास्ना, चन्दन, खस, छोटी इलायची और सेढासिंगी इन सबको सम भाग लेकर कूट पीसकर कपड़छन करले। फिर इनके चूर्ण की धूनी अपने पहनने के वस्त्रों में दे। उन वस्त्रों को पहिन कर जिस साध्य व्यक्ति के पास पहूँचेगा, वह तुरन्त वश में हो जायेगा।

वशीकरण काजल

कूठ, तगर और तालीसपत्र इन सबको मिलाकर तथा पीसकर, फिर उस चूर्ण को रूई की बत्ती में भरकर बत्ती को सरसों के तेल भरे हुए दीपक में डालकर उस दिन जलाये जिस दिन रविवार को पुष्प नक्षत्र और अमावस्या तिथि हो। दीपक को किसी मनुष्य की खोपड़ी पर रखकर उसमें काजल पारे। इस काजल को अपनी आँखों में लगाकर साधक जिस व्यक्ति के सामने जा पहुँचेगा, वह उसे देखते ही वशीभूत हो जायेगा।

राजा वशीकरण प्रयोग

सुदर्शन की जड़ को अपनी दायीं भुजा में बांधकर राजा के पास जाने से राजा वशीभूत हो जाता है।

राजा वशीकरण काजल

पुष्य नक्षत्र वाले दिन सुदर्शन की जड़ को उखाड़ कर ले आये, फिर उसे कपूर तथा तुलसीपत्र के साथ पीसकर वस्त्र पर लेप करे। तत्पश्चात् विष्णुक्रान्ता के बीजों के तेल में उक्त वस्त्र की बत्ती बनाकर दीपक जलाये और काजल पारले। इस काजल को आंखों में लगाकर राजा के समीप जाने पर राजा वशीभूत हो जाता है।

राजा वशीकरण बन्धन

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में किसी बगीचे में जाकर एक अनार का फल तोड़ लाये फिर उस अनार को धूप देकर अपनी दायीं भुजा में बांधकर राज-सभा में जाय तो राजा उसे देखते ही वशीभूत हो जायेगा।

वशीकरण नस्य

बिजौरे की जड़ और धतूरे के बीज को प्याज के साथ महीन पीसकर जिसे सुंघाया जाये, वह व्यक्ति वशीभूत हो जाता है।

राजा वशीकरण प्रयोग

पुष्य नक्षत्र में सिंही की जड़ को उखाड़ लाये, फिर उसे कमरे में बांधकर राजा के पास जाये तो राजा उसे देखते ही वशीभूत हो जायेगा।

स्त्री वशीकरण चूर्ण

काकजंघा, मैनसिल, केशर और तगर इन सबको समभाग लेकर चूर्ण बनाले। इस चूर्ण को जिस साध्य स्त्री के मस्तक में छिड़का जाएगा वह साधक के वशीभूत हो जायेगी।

पति वशीकरण तिलक

केले का रस, गोरोचन और अपने गुप्तांग का रक्त इन सबको संयुक्त कर अपने मस्तक पर तिलक लगाने वाली स्त्री अपने पति को वशीभूत कर लेती है।

पति वशीकरण लेप

सफेद सरसों, तुलसी, धतूरे का फूल, ओंगा तथा तिल का तेल इन सबको खूब महीन पीसकर जो स्त्री अपने शरीर पर लेप करती है, उसका पति तन-मन से उसके वशीभूत हो जाता है।

स्त्री वशीकरण प्रयोग

माघ के महीने में जब बुधवार के दिन अष्टमी तिथि और स्वाति नक्षत्र हो, उस दिन एक बार पहले आक के पौधे को न्यौत आवे, फिर दूसरी बार जाकर उसकी छाल तोड़ लावे। उस कौंपल को जिस स्त्री के सिर पर डाला जायेगा, वह जाधक के वशीभूत हो जायेगी।

स्त्री वशीकरण तिलक

पुष्य नक्षत्र में काले धतूरे के पुष्प को लाये। भरणी नक्षत्र में उसका फल लाये। विशाखा नक्षत्र में उसकी शाखा लाये। हस्त नक्षत्र में उसके पत्ते लाये तथा मूल नक्षत्र में जड़ उखाड़ लाये। फिर इन सबके सम भाग कपूर, कुंकुम और गोरोचन लेकर सबको एक साथ पीस कर मस्तक पर तिलक करे। तत्पश्चात् जिस अभिलाषा से स्त्री के समीप पहुँचा जायेगा, वह देखते ही वशीभूत हो जायेगी। इस प्रयोग को भी तन्त्र शास्त्रियों ने भी अत्यन्त चमत्कारिक माना है।

स्त्री वशीकरण तन्त्र

इच्छित स्त्री की एक पुतली का निर्माण करे। फिर उस स्त्री के सिर के केश को उस पुतली के सिर में लगा दे। तत्पश्चात् उस पुतली के गुप्तांग में अपना वीर्य

डालकर उसे नीले वस्त्र से वेष्टित करे और सिन्दूर से पोत दे। इसके बाद उस पुतली को साधक स्त्री के दरवाजे पर गाड़ दे। जिस समय वह स्त्री उस स्थान को लांघकर निकलेगी उसी समय से वह तन-मन-धन से साधक पुरुष के वशीभूत हो जायेगी। यह प्रयोग अत्यन्त चमत्कारी है।

स्त्री वशीकरण तन्त्र

पुष्य नक्षत्र में धोबी के पांव के नीचे की धूल लाकर रखलो, फिर रविवार के दिन सन्ध्या के समय जिस साधक स्त्री के मस्तक पर उस धूल को डाल दिया जाये तो वह साधक के वशीभूत हो जायेगी।

स्त्री वशीकरण तिलक

रविवार के दिन काले धतूरे की जड़ और फल, फूल, पत्ते और डाली को लाकर पीस ले। फिर उसमें कपूर, कुंकुम तथा गोरोचन मिलाकर अपने मस्तक पर तिलक करे और अभिलषित स्त्री के सामने जाये तो वह साधक को देखते ही वशीभूत होती है।

स्त्री वशीकरण भस्म

अपने हाथ-पांव की उंगलियों के नाखूनों को जला कर भस्म बनाले। फिर उस भस्म को किसी खाने-पाने

की वस्तु के माध्यम से जिस साध्य स्त्री को खिला दिया जाये, वह साधक के वशीभूत हो जाती है।

स्त्री वशीकरण लेप

हल्दी, गोमूत्र, घी, सरसों और पान के रस को पीसकर शरीर पर लेप करे। तत्पश्चात् जिस साध्य स्त्री के सामने पहुँचे, वह देखते ही वशीभूत हो।

स्त्री वशीकरण प्रयोग

जिस स्त्री को वश में करना हो, शनिवार के दिन उसके बायें पांव के नीचे की धूल ले आये और उस धूल से एक पुतली बनाकर जिधर से वह स्त्री गुजरती हो, गाड़ दे। उधर से गुजरते ही वह साधक के वशीभूत हो जायेगी।

सर्वजन वशीकरण चूर्ण

नदी के किनारे वाले भाऊ वृक्ष की जड़ लाकर पुष्य नक्षत्र के दिन उसमें समभाग कूडे की छाल मिलाकर चूर्ण करले। फिर उसमें समभाग श्मशान की राख मिलाकर रखले। इस चूर्ण को जिस साध्य व्यक्ति के मस्तक पर डाला जायेगा, वही साधक के वशीभूत हो जायेगा।

स्त्री वशीकरण प्रयोग

शनिवार के दिन जब धनिष्ठा नक्षत्र हो उस दिन बबूल की जड़ को लाकर जिस स्त्री के मस्तक पर डाल दिया जाये तो वह साधक के वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-पुरुष वशीकरण तन्त्र

चिता की भस्म, कूठ, तगर तथा कुंकुम इन सबको एक साथ पीसकर चूर्ण बनाले। आवश्यकता के समय चूर्ण को जिस स्त्री के मस्तक पर अथवा जिस पुरुष के पांव के नीचे डाल दिया जायेगा, वह साधक के वशीभूत हो जाते हैं।

स्त्री वशीकरण तिलक

पुष्य नक्षत्र में धतूरे का पुष्प तथा मूल नक्षत्र में धतूरे की जड़ ले आये। फिर उसमें समभाग गोरोचन तथा कपूर मिलाकर पीस ले और अपने मस्तक पर उस लेप का तिलक लगाये। तिलक लगाते समय साध्य स्त्री के नाम का उच्चारण करे। तत्पश्चात उस तिलक को लगाये हुये साध्य-स्त्री के सामने जा खड़ा हो तो देखते ही वशीभूत हो जाती है।

स्त्री वशीकरण प्रयोग

पुष्य नक्षत्र में काले धतूरे की जड़ लाकर रविवार के दिन जिस साध्य स्त्री के शरीर से उसका स्पर्श करा दिया जाय, वह वशीभूत हो जाती है।

स्त्री वशीकरण प्रयोग

सहवास के पश्चात् अपने बाएं हाथ से अपने वीर्य को स्त्री के बाएं पांव के तलवे में लगा देने से वह स्त्री सदैव उसके लिए उस सहवास कर्त्ता के वशीभूत हो जाती है। अनेक तन्त्र शास्त्रों में तथा वात्स्यायन विरचित कामसूत्र में इस तान्त्रिक साधन की अत्यधिक प्रशंसा की गई है।

शत्रु वशीकरण तन्त्र

भोजपत्र के ऊपर लाल चन्दन से शत्रु का नाम लिखकर उस भोजपत्र को शहद में दबा देने से शत्रु साधक के वशीभूत हो जाता है।

शत्रु वशीकरण प्रयोग

रविवार के दिन सवेरा होने से दो घड़ी पहले ही साधक श्मशान भूमि में पहुँचे। वहाँ अपने दोनों हाथों

को पीछे की ओर करके एक लकड़ी को उठा ले, फिर उस लकड़ी को लाकर किसी एकान्त स्थान में रख दे और पूजन करे। इस प्रकार इक्कीस दिन तक उस लकड़ी का पूजन करना है, तत्पश्चात् किसी खाती (बढ़ई) के घर उस लकड़ी को ले जाकर उसके सात टुकड़े करवा ले। उनमें से एक टुकड़े को शत्रु के घर में गाढ़ दे तथा शेष छः टुकड़ों को किसी नदी में बहा दे। यह प्रयोग भी अत्यन्त चमत्कारी है।

आकर्षण के प्रयोग

वशीकरण सम्बन्धी तान्त्रिक प्रयोगों का वर्णन किया जा चुका है। अब आकर्षण सम्बन्धी कुछ ऐसे तान्त्रिक प्रयोगों का वर्णन किया जा रहा है, जिनके लिए किसी तन्त्र अथवा यन्त्र के साध्य की आवश्यकता नहीं पड़ती प्रयोग निम्नलिखित हैं।

स्त्री आकर्षण तन्त्र

होली के दिन होली को न्यौता देकर उसकी एक लकड़ी को घर ले आओ। फिर उस लकड़ी का धूप, दीप आदि से पूजन करे। तत्पश्चात उस लकड़ी को हाथ में

लेकर धोबी के घर जा पहुँचे। वहां धोबी की भट्टी के नीचे उस लकड़ी को जलाकर कोयला बना ले, फिर उन कोयलों को लेकर घर चला आये।

हस्त नक्षत्र आने पर उन कोयलों को कूट-पीसकर चूर्ण बनाकर रख ले। फिर आवश्यकता के समय जिस स्त्री को अपनी ओर आकर्षित करना हो, उस स्त्री के मस्तक पर उस चूर्ण को डाल दे। ऐसा करने से साध्य स्त्री आकर्षित होकर साधक के पास आ जाती है।

सर्वजन आकर्षक चूर्ण

अश्लेषा नक्षत्र में देवदारु की लकड़ी को लाकर बकरे के मूत्र में भिगोकर कूट-पीसकर सुखाकर रख ले। फिर जिस व्यक्ति को आकर्षित करना हो, उसके मस्तक पर यह चूर्ण डाल दे तो वह साधक के प्रति आकर्षित हो जाता है।

सर्वजन आकर्षण तन्त्र

पंचमी तिथि को हुलहुल की जड़ खोद लाये। फिर उसका चूर्ण बनाकर पान में रखकर जिसे खिला दिया

जायेगा, वह व्यक्ति आकर्षित होकर साधक के पास चला आयेगा।

स्त्री आर्षण तन्त्र

जिस स्त्री को आकर्षित करना हो, उसके बाएं पांव के नीचे की मिट्टी लाकर गिरगिट के रक्त में सानकर उस से एक पुतली बनावे। पुतली के वक्षःस्थल पर साध्य स्त्री का नाम लिखे। फिर उसको पेशाब करने की जगह में गाड़कर उसके ऊपर प्रतिदिन पेशाब करता रहे।

इस प्रयोग के फलस्वरूप पुतली के वक्षःस्थल पर जिस स्त्री का नाम लिखा होगा, वह एक हजार कोस की दूरी से भी आकर्षित होकर साधक के समीप पहुँच जायेगी।

मोहन के प्रयोग

वशीकरण और आकर्षण के प्रयोगों का वर्णन किया जा चुका है। अब मोहन सम्बन्धी प्रयोगों का वर्णन किया जाता है। जो नीचे लिखे अनुसार हैं।

सर्वजन मोहन धूप (१)

इन्द्रायन, चिदम्बर और मैनसिल इन सबको सम भाग लेकर जौ कुट करके अपने अंग में धूप दे तथा साध्य व्यक्ति के समीप जा पहुँचे तो वह देखते ही वशीभूत हो जाता है।

सर्वजन मोहन धूप (२)

वच, कूठ, चन्दन और काकड़ासिंगी इन सबको जौ कुट करके अपने शरीर तथा वस्त्रों पर धूप देकर साध्य व्यक्ति के समीप जा पहुँचे तो वह देखते ही मोहित हो जाता है।

राजकुल मोहन धूप

अगर, गूगल और नील कमल इन सबको समभाग लेकर इनकी अपने सब अंगों में धूप देकर राज सभा में पहुँच जाय तो राजकुल के सभी लोग मोहित हो जाते हैं।

सर्वजन मोहन तिलक

सफेद घुंघची तथा बादाम का पंचांग इन दोनों वस्तुओं को एक साथ पीसकर मस्तक पर तिलक लगा

कर जिस व्यक्ति के पास पहुँच जायेगा, वह देखते ही मोहित हो जायेगा।

स्त्री मोहन तिलक

रविवार के दिन तुलसी के बीजों को सहदेई के रस में पीसकर उसका मस्तक पर तिलक लगाकर जिस साध्य स्त्री के पास पहुँच जाय वह देखते ही मोहित हो जाती है।

स्त्री मोहन तिलक

जीरा, कुटकी, सफेद आक की जड़ तथा नागर मोथा इन सबको अपने शरीर के रक्त के साथ पीसकर मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य स्त्री के समीप पहुँच जाय तो वह देखते ही मोहित हो जाती है।

सर्वजन मोहन प्रयोग

चैत्र मास में कृष्णपक्ष की अष्टमी के दिन चीता (चित्रक) नाम के पौधे को न्यौता आये। फिर नवमी के दिन उसे लाकर धूप, दीप देकर अपने पास रख ले। जब तक वह साधक जिन व्यक्तियों की ओर देखता

रहेगा, तब तक देखने वाले सभी साध्य व्यक्ति उसकी ओर मोहित रहेंगे ।

राजसभा मोहन तन्त्र

राई, चिरचिटा तथा शंखाहूली को कूटकर सफेद गाय के दूध में मिलाकर अपने सम्पूर्ण शरीर पर लेप करे । फिर जल से स्नान करके अपने मस्तक पर केशर का तिलक लगाकर राजसभा में जाय तो वहां उपस्थित सभी लोग मोहित हों ।

सभा मोहन तिलक

मैनसिल, पत्रज, गोरोचन और केशर इन सबको समभाग ले पानी में पीसकर अपने मस्तक पर तिलक लगाकर जिस किसी सभा में साधक पहुँच जायेगा, वहां उपस्थित सभी लोग मोहित हो जायेंगे ।

सर्वजन मोहन काजल (१)

कड़वी तुम्बी के बीजों के तेल में रेशमी वस्त्र की बत्ती बनाकर दीपक जलाये और उसका काजल पारे । फिर उस काजल को आंखों में आंज कर जिस साध्य

व्यक्ति के समीप पहुँच जायेगा, वह देखते ही मोहित हो जायेगा।

सर्वजन मोहन काजल (२)

औदुम्बर के फूल की बत्ती बनाकर उसे मक्खन भरे हुये दीपक में जलाकर काजल पारे। फिर उस काजल को आंखों में आंजने से देखने वाले सभी लोग मोहित हो जाते हैं।

स्तम्भन के प्रयोग

अब स्तम्भन के तांत्रिक प्रयोगों का वर्णन किया जाता है। उन्हें नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये।

शत्रु स्तम्भन प्रयोग

गोरोचन तथा केशर को महावर के साथ घिसकर उसके द्वारा भोजपत्र के ऊपर शत्रु का नाम लिखने मात्र से ही शत्रु का स्तम्भन हो जाता है और वह साधक के वशीभूत बना रहता है।

शत्रु मुख स्तम्भन प्रयोग (१)

चौलाई की जड़ को चाँदी के तावीज में मढ़वाकर अपने मुँह में रखने पर शत्रु का मुंह बन्द हो जाता है और वह साधक के सामने से भाग जाता है।

सर्व मुख स्तम्भन प्रयोग (२)

हरताल के रस द्वारा मदार (आक) के पत्ते पर जिस व्यक्ति का नाम लिखकर किसी बगीचे के ईशान कोण में गाढ़ दिया जायेगा, उसका मुख स्तम्भीभूत (बन्द) हो जायेगा।

नौका स्तम्भन प्रयोग (१)

भरणी नक्षत्र में गूलर की लकड़ी की पांच अंगुल के आकार वाली कील बनाकर नाव के ठीक बीच में गाढ़ देने से नौका का स्तम्भन होता है अर्थात् वह चलाये से नहीं चलती।

नौका स्तम्भन प्रयोग (२)

क्षीरी वृक्ष की लकड़ी की पांच अंगुल आकार की कील बनाकर नाव में डाल देने से नौका का स्तम्भन होता है।

नौका स्तम्भन प्रयोग (३)

जंगल से काले तीतर को पकड़ लाये। फिर उसे पिंजड़े में बन्द करके हल्दी युक्त मालकांगुनी खिलाये। वह बीट करे तब उसे सुखाकर चूर्ण बनाकर रख ले। इस चूर्ण को नाव में डाल देने से नौका का स्तम्भन होता है।

मेघ स्तम्भन प्रयोग (१)

मिट्टी की दो हांडियों में श्मशान का अंगर भरकर उन दोनों का मुंह परस्पर मिलाकर जंगल में गाढ़ देने से मेघ स्तम्भन होता है अर्थात् पानी बरसना बन्द हो जाता है।

मेघ स्तम्भन प्रयोग (२)

श्मशान के अंगारों को दो ईंटों में रखकर अथवा श्मशान के अंगारों में ईंटों को रखकर किसी निर्जन जंगली स्थान में गाढ़ देने से मेघ स्तम्भन होता है अर्थात् पानी बरसना बन्द हो जाता है।

जल स्तम्भन प्रयोग

मिट्टी के घड़े में पानी भरकर उसमें पिठवन की जड़ का खूब महीन पिसा हुआ चूर्ण डाल देने से पानी का स्तम्भन हो जाता है अर्थात् पानी बन्द हो जाता है।

अग्नि स्तम्भन प्रयोग

जलती हुई भट्टी में घोड़े का खुर तथा बेल की जड़ डाल देने से अग्नि की लपटें उठना बन्द हो जाती हैं। केवल काले रंग का धुआं उठता रहता है।

निद्रा स्तम्भन प्रयोग (१)

कटेली की जड़ तथा महुए को एकत्र पीसकर सूंघने से निद्रा का स्तम्भन होता है अर्थात् नींद नहीं आती।

निद्रा स्तम्भन प्रयोग (२)

कटेली की जड़ तथा गुलमोहरा को समभाग लेकर खूब महीन पीस लें। इस चूर्ण का नस्य लेने से भी निद्रा नहीं आती।

व्याघ्र स्तम्भन प्रयोग (१)

हस्त नक्षत्र में सफेद कटेरी की जड़ लाकर हाथ में बांध लेने से व्याघ्र स्तम्भन होता है अर्थात् ऐसे व्यक्ति

को देखते ही व्याघ्र (वाघ) ठिठक कर खड़ा रह जाता है अथवा पीछे लौट जाता है।

व्याघ्र स्तम्भन प्रयोग (२)

पुष्य नक्षत्र में उसी दिन काले धतूरे की जड़ लाकर बायीं बांह में बांधने से भी व्याघ्र स्तम्भन होता है।

व्याघ्र स्तम्भन प्रयोग (३)

रविवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो तब सफेद आक की जड़ लाकर रख ले। इस जड़ को अपनी दायीं भुजा में बांधने से व्याघ्र स्तम्भन होता है।

पशु स्तम्भन प्रयोग (१)

ऊंट के शरीर के हाड़ को किसी पशु के ऊपर डाल देने से पशु का स्तम्भन होता है अर्थात् वह जहां का तहां खड़ा रह जाता है।

पशु स्तम्भन प्रयोग (२)

पशुशाला के चारों ओर ऊंट की हड्डी गाड़ देने से उस पशुशाला में रहने वाले गाय भैंस आदि पशु जहां के तहां खड़े रहते हैं। वे पशुशाला से बाहर निकल कर नहीं जाते।

मनुष्य स्तम्भत प्रयोग

जिस मनुष्य का स्तम्भन करना हो उसका नाम रजस्वला स्त्री के वस्त्र पर गोरोचन से लिखो। फिर उस कपड़े को उस व्यक्ति के नाम का उच्चारण करते हुए घड़े में वन्द कर रख दे। ऐसा करने से साध्य व्यक्ति का स्तम्भन होता है अर्थात् वह चल फिर नहीं पाता और एक ही स्थान पर पड़ा रहता है।

शस्त्र स्तम्भन प्रयोग

हस्त नक्षत्र में चित्रक की जड़ को लेकर अपनी भुजा अथवा मस्तक पर बांधकर युद्ध भूमि में जाने से शस्त्र स्तम्भन होता है अर्थात् शस्त्र की चोट नहीं लग पाती।

अग्नि भय स्तम्भन प्रयोग

रविवार के दिन सफेद कनेर की जड़ लाकर अपनी दायीं भुजा में धारण कर लेने पर अग्नि से जलने का भय नहीं रहता।

कुक्कुट शब्द स्तम्भन प्रयोग

मुर्गों के कण्ठ में आधा तोला रांगा बांध देने से मुर्गा बांग देना बन्द कर देता है। रांगे को खोल दो तो फिर बांग देने लगता है।

कुक्कुट शब्द स्तम्भन प्रयोग

मुर्गे के सिर पर तेल लगा देने से मुर्गा बांग देना बन्द कर देता है। जब सिर का तेल छूट जाता है अर्थात् पुछ जाता है अथवा सूख जाता है तब बांग देने लगता है।

उच्चाटन के प्रयोग

अब उच्चाटन सम्बन्धी प्रयोगों का वर्ण किया जाता है। उन्हें नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये।

गृह स्वामी उच्चाटन प्रयोग (१)

गधी के बाएं पांव के नीचे की धूल को उठाकर रविवार के दिन मध्य काल में जिस घर में डाल दिया जाएगा उस घर के स्वामी का उच्चाटन होता है अर्थात् चला फिरा नहीं जाता है।

गृह स्वामी उच्चाटन प्रयोग (२)

एक शिव लिंग बनाकर उस पर ब्रह्मदण्डी तथा चिता की भस्म का लेप करे फिर उसे सफेद सरसों के साथ रात्रि के समय जिस घर में फेंक दिया जाता है उस घर के स्वामी का उच्चाटन होता है।

शत्रु उच्चाटन प्रयोग (१)

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में अंगुल प्रमाण कुंकुम की लकड़ी शत्रु के घर में रख देने से उसका शत्रु का उच्चाटन होता है।

शत्रु उच्चाटन प्रयोग (२)

गीध पक्षी के सिर का चूर्ण शत्रु के मस्तक पर डाल देने से शत्रु का उच्चाटन होता है।

शत्रु उच्चाटन प्रयोग (३)

नींबू की लकड़ी, गीध की हड्डी, बिल्ली का चमड़ा और नख, धतूरे का रस तथा श्मशान की हड्डी इन सब को इकट्ठा करके शत्रु के घर में डाल देने से शत्रु का उच्चाटन होता है।

सर्वजन उच्चाटन प्रयोग

पीपल की लकड़ी की दस अंगुल प्रमाण की कील बनाकर जिस व्यक्ति के घर में गाढ़ दी जाती है उसका उच्चाटन होता है और वह व्यक्ति अत्यन्त दुखी होकर इधर-उधर भटकने लगता है।

विद्वेषण के प्रयोग

अब विद्वेषण सम्बन्धी तन्त्रों का वर्णन किया जाता है। वे आगे लिखे अनुसार हैं।

विद्वेषण प्रयोग (१)

रविवार के दिन दोपहर के समय जिस स्थान पर गधा लोटा हो उस स्थान की धूलि लाकर जिस घर में डाल दी जायेगी, उस घर में रहने वाले लोगों में परस्पर लड़ाई झगड़ा होने लगता है।

विद्वेषण प्रयोग (२)

सेही के कांटे को जिस घर के दरवाजे पर गाढ़ दिया जाता है उस घर में रहने वाले व्यक्ति परस्पर प्रतिदिन लड़ते झगड़ते रहते हैं। जब उस कांटे को निकाल कर

बाहर कर दिया जाता है तो झगड़ा भी शान्त हो जाता है। यह परम चमत्कारी उपयुक्त प्रयोग कहा गया है।

मित्र विद्वेषण प्रयोग

हाथी और सिंह के बाल लाकर रख ले फिर जिन दो मित्रों में झगड़ा कराना हो उन दोनों के पांव के नीचे की मिट्टी ले आये। तत्पश्चात् सब वस्तुओं को एकत्र कर किसी कपड़े में बांधकर पृथ्वी में गाढ़ दे, फिर उसी स्थान पर अग्नि जलाकर १०८ चमेली के फूल की आहुति दे। इस तन्त्र के प्रयोग से उन दोनों मित्रों में परस्पर झगड़ा हो जाता है। प्रयोग भी अत्यन्त प्रभाव-शाली कहा गया है।

चौथा प्रकरण

शिव मन्त्र

शिव ताराडव स्तोत्र

(केवल भाषा)

श्री महादेव जी अपने जटारूपी वन से निकलती भागीरथी को धारण से पवित्र हुये कण्ठ में सर्पों की लम्बी माला पहने, 'डम' शब्द करने वाले, डमरू को बजाते ताण्डव नृत्य करते हैं। वह हमारा मंगल करें ॥ १ ॥

जटारूपी पहाड़ में अत्यन्त वेग से भ्रमण करती हुई देवताओं की नदी अर्थात् गंगाजी की चंचल तरंग रूपी लता जिनके मस्तक में विराजमान है, धक्-धक् शब्द को करती हुई अग्नि जिनके ललाट में प्रज्वल्लित हो रही है और नवीन चन्द्रमा को मस्तक पर धारण करने वाले ऐसे श्री शिवजी के विषय में मेरी प्रीति प्रतिक्षण अर्थात् सदा बढ़ती रहे ॥ २ ॥

गिरितिनया श्री पार्वती जी के विलासयुक्त मनोहर कटाक्षों से जिनके मन में आनन्द छा रहा है, अपने भक्तों की कठिन विपत्तियों को जिन्होंने दूर कर दिया है, ऐसे तथा दिशारूपी वस्त्र को धारण करने अथात् भगवान् शिवजी के विषय में मेरा मन आनन्द को प्राप्त होवे॥३॥

जटाओं में लिपटे हुए सर्पों के पास स्वर्ण और प्रकाशमान फणों की मणियों की कान्तिरूपी केसर से जिन्होंने दिशारूपी स्त्रियों के मुख को लुप्त (पीला कर दिया है। जो मन्दोन्मत्त गजासुर के उत्तरीय अर्थात् ओढ़ने के वस्त्र से शोभायमान हैं, ऐसे सब प्राणियों की रक्षा करने वाले शिवजी के विषय में मेरे मन को अद्भुत आनन्द प्राप्त हो ॥ ४ ॥

जिन्होंने मस्तक रूपी आंगन में जलती हुई अग्नि कणों से कामदेव को भस्म कर दिया है, जिनको इन्द्र आदि नमस्कार करते हैं, जिनका मस्तक चन्द्रमा की रेखा से शोभायमान हो रहा है और जिनकी जटाओं में गंगाजी विराजमान हैं ऐसे कृपालु श्री शिवजी हमको धर्म आदि सम्पत्ति प्रदान करें ॥ ५ ॥

इन्द्रभृति देवगणों के मुकटो में लगे हुए फूलों की मालाओं के पराग से जिनके चरणों के नीचे की धूल धूसर रंग की हो रही है, सर्पों के राजा वासुकी नाग की माला बनकर उससे अपनी जटा को जिन्होंने बांध रक्खा है और चन्द्रप्रभा जिनके महल को सुशोभित करते हैं, ऐसे श्री शिवजी बहुत काल तक हमको धर्म, अर्थ, काम और मोक्षरूपी सम्पत्ति दें ॥ ६ ॥

जिन्होंने अपने भयंकर मस्तक रूपी पट्टिकाओं से धक्-धक् शब्द कर जलती हुई अग्नि में कामदेव का हनन कर दिया है, जो हिमालय की पुत्री (पार्वती) के स्तनों के अग्रभाग में चित्रकारी करने में परम चतुर हैं, जिनके तीन नेत्र हैं, ऐसे शिवजी में मेरा प्रेम बना रहे ॥ ७ ॥

नवीन मेघों की घटाओं से परिपूर्ण अमावस्या के अन्धकार के समान अत्यन्त पूर्ण कण्ठवान् देवताओं की नदी श्री गंगाजी को धारण किये हैं, हाथी के चर्म से जिनका शरीर शोभायमान है और चन्द्रमा से जिनका मस्तक विभूषित हो रहा है। संसार के भार को धारण करने वाले ऐसे श्री शिवजी हमारी धर्म आदि चारों सम्पत्तियों को बढ़ायें ॥ ८ ॥

जिनकी ग्रीवा विकसित नीले कमल की कालिमा

(कालेपन) के समान सुन्दर कृष्ण भांति से शोभायमान है, जिन्होंने कामदेव को भस्म कर दिया है। जिन्होंने त्रिपुर दैत्य का वध करके संसार के भय को दूर कर दिया था, जिन्होंने गजासुर अन्धकासुर दैत्यों का नाश किया है और जो काल छेदन करने वाले हैं, ऐसे श्री शिवजी का सदैव भजन करता हूँ ॥ ९ ॥

यदि सब प्रकार के कल्याणों को देने वाली चौंसठ कला और चौदह विद्याओं को कदम्ब का वृक्ष मान लें तो उसकी मंजरी से निकले हुये, रस की मधुरता का आस्वादन करने में जो भ्रमर के समान हैं अर्थात् जो सब विद्याओं को जानने वाले हैं। जो कामदेव और त्रिपुरासुर को नाश करने वाले हैं, मैं ऐसे सदाशिव का भजन करता हूँ ॥ १० ॥

जिनके कराल भाल में अत्यन्त वेग से भ्रमण करते हुये सर्पों के श्वांस से अग्नि तेज हो गई है तो भी जो धिम-धिम शब्द करते हुए मृदंग की उच्च मंगल ध्वनि के अनुसार-ताण्डव में प्रवृत्त होते हैं, ऐसे श्री शिवजी सदा जय को प्राप्त हों ॥ ११ ॥

पत्थर की शिला और पुष्प आदि की विचित्र शय्या में सर्प और मोतियों की माला में, बहुमूल्य रत्न और

मृत्तिका के ढेर में मित्र और शत्रु में, तरुण और कमल के समान नेत्रों वाला स्त्रियों में प्रजा और चक्रवर्ती होकर मैं सदाशिव का भजन करूंगा ॥ १२ ॥

मैं देवताओं की नदी गंगा जी की निकुन्ज के भीतर बैठकर दुष्ट प्रकृति को त्याग कर, सदा दोनों हाथ जोड़कर सिर पर रखता हुआ तथा अत्यन्त चंचल नेत्र वाली स्त्रियों में रत्नरूप पार्वती जी के ललाट मन्त्र का उच्चारण करता कब सुखी होऊंगा ॥ १३ ॥

देवताओं के स्वामी इन्द्र जो अप्सराओं के समूह के शिर मे जो चमेली के फूलों के गुच्छे गुंथ रहे हैं, उनसे अधिकता के साथ टपकते हुए पुष्प रस की गरमी से (पसीने के निकलने के कारण) जिनके पैर अत्यन्त उष्ण मालूम होते हैं और जो परम शोभा के स्थान हैं, ऐसे शिवजी के शरीर की कांतियों का समूह हमारे मन के आनन्द को अहर्निश (रात दिन) बढ़ावे ॥ १४ ॥

समुद्र की अत्यन्त प्रचण्ड वाड़वाग्नि के समान प्रकाशमान और अमंगल का नाश करने वाली अणिमा महिमा आदि अष्टसिद्धियों के साथ स्त्रियों ने ही जिनके मांगलिक शुभ गीत गाए हैं और "शिव" यह मन्त्र ही जिनका भूषण है, ऐसे जो मुक्त स्वभाव वाली वामलोचना

(सुन्दर नेत्रों वाली) पार्वती के विवाह समय की ध्वनि है, वह जगत् का कल्याण करे ॥ १५ ॥

उत्तमोत्तम इस शिवस्तवन को नित्य पढ़ने, बोलने तथा गान करने वाला मनुष्य सदैव शुद्ध बुद्धि वाला बन जाता है और देव गुरु (सर्वोत्तम ज्ञानी) भगवान श्री शंकर में भक्ति प्राप्त करके अन्त समय में मुक्ति को प्राप्त होता है और जब तक इस जगत् में जीवित रहता है तब तक प्राणीमात्र को मोहित कर लेता है क्योंकि यह परम सम्मोहन तन्त्र है ॥ १६ ॥

जो मनुष्य प्रदोष काल में पूजा के समाप्त होने पर शम्भु की ही जिसमें प्रधान है, ऐसे रावण के बनाये हुए इस स्त्रोत का पाठ करता है उसे शिवजी मदोन्मत्त हाथी और घोड़ों आदि के साथ सदैव स्थिर रहने वाली धन-धान्य सुखदायक लक्ष्मी प्रदान करते हैं ॥ १७ ॥

॥ इति श्री रावणकृत शिव ताण्डव स्त्रोत सम्पूर्ण ॥

शिव महिम्न स्तोत्र

(केवल भाषा)

हे हर ! शिव शंकर ! आपकी महिमा को पूर्णतया न जानने वाला व्यक्ति जो आपकी स्तुति करता है वह स्तुति यदि उचित नहीं है तो ब्रह्मा आदि सर्वत्र देवों से की गयी स्तुतियां भी आपके योग्य नहीं हैं क्योंकि आपका परिमाण नहीं है। अतः सर्वज्ञ होते हुए भी ब्रह्मादि देव आपके गुणों का पूर्णतया वर्णन नहीं कर सके तो भी जैसे चिड़ियां अनन्त आकाश में अपनी शक्ति के अनुसार उड़ा करती हैं उसी तरह भक्त भी अपनी बुद्धि के अनुसार आपकी स्तुति गा सकता है। इसमें उपहास या लज्जा की बात नहीं है ॥ १ ॥

हे भगवन् ! आप सगुण भी हो और निर्गुण भी इसलिये आपकी महिमा मन और वाणी का विषय नहीं है। श्रुति भी कहती है कि "यतो गते निवर्तन्ते अप्राप्य मतरंग सह" याने जिसका वर्णन वेद भी चकित सा होकर करता है, पर पूर्णतया नहीं कर सकता। तब उस आपकी

महिमा का वर्णन अन्य कौन कर सकता है। क्योंकि सगुण आप में कितने गुण हैं यह जब जानने में नहीं आता तब निर्गुण स्वरूप आपके गुणों का वर्णन तो नितान्त कठिन ही है फिर भी भव्य वस्तु के लिए किसका मन और वचन नहीं ललचाता है, तदनुसार आपके इस महिम्न स्तोत्र को गाने में मैं भी उद्योग कर रहा हूँ ॥ २ ॥

हे ब्रह्मन् ! सर्व व्यापक महेश्वर ! देवगुरु बृहस्पति आदि द्वारा की गई आपकी स्तुति भी विस्मयकारिणी नहीं हो सकती, क्योंकि आपके निश्वास द्वारा निकली हुई एवं अलंकारों से युक्त मधु के समान मधुर तथा उत्तम वह वेदवाणी अत्यन्त स्वादु है तात्पर्य यह है कि जब बृहस्पति आदि से की गई स्तुति में भी कोई विशेषता नहीं है तब हम तो किसी योग्य नहीं हैं जो आपकी स्तुति लिख सकें। फिर भी हे त्रिपुरासुर के मारने वाले प्रभो ! आपके गुणगान से जो पुण्य होगा उससे मेरी बुद्धि निर्मल होगी। ऐसा समझकर आपकी स्तुति गाने में मेरी बुद्धि उद्यत हुई है ॥ ३ ॥

हे वांछित वस्तुओं के देने वाले प्रभो। संसार की उत्पत्ति रक्षा और प्रलय करने वाला आपका ऐश्वर्य और जिसको ऋग्, यजु, साम, अथर्व इन नामों वाले वेदों

में भी गाया है तथा जो ब्रह्मा, विष्णु स्वरूप हैं, उसको नष्ट करने के लिए कुछ जड़ बुद्धि वाले निन्दा किया करते हैं, वह निन्दा शोभनीय नहीं होने पर भी भाग्यहीनों को अच्छी लगाती ॥ ४ ॥

मूर्ख मनुष्य आपके विषय में क्या शंकायें किया करते हैं उनका उत्तर यह है—

हे प्रभो ! आप तर्क करने के योग्य नहीं हो तो भी आपके विषय में संसार को मोह में डालने वाला कुतर्क बुद्धिहीन मनुष्यों को वाचाल बना रहा है। मूर्ख लोग ऐसा तर्क किया करते हैं कि यदि दाता (परमेश्वर) त्रिभुवन की सृष्टि करता है तो उसकी चेष्टा क्या है ? उसका कैसा शरीर है ? क्या २ उसके पास साधन हैं ? किस आधार पर वह सृष्टि बनाता है और उसका उत्पादन कारण क्या है ? जैसे कुम्हार घड़ा बनाता है तो मिट्टी लाता है, चाक चलाता है इत्यादि कई कार्य उसे करने पड़ते हैं। यदि उस परमेश्वर में यह सभी व्यापार नहीं, तो जंगल को कैसे बना सकता है ? यह सब कुतर्क जैसे आंखों से दूसरी चीज देखी जा सकती है पर वह अपने रूप को नहीं देख सकते, इसी प्रकार आप भौतिक से प्रत्यक्ष नहीं किये जा सकते, पर अज्ञानी लोग ऐसा तर्क करके लोगों को मोह में डाल सकते हैं ॥ ५ ॥

हे अमरवर (सब देवताओं में श्रेष्ठ) क्या यह भू (पृथ्वी) आदि लोक खण्ड वाले होते हुए भी जन्म रहित हैं अर्थात् नहीं तथा क्या पृथ्वी आदि की सृष्टि बिना किसी कर्ता के हो सकती है अर्थात कदापि नहीं। यदि बनाने वाला है तो उसके पास रचना की सामग्री क्या है, क्योंकि अल्पज्ञ जीव तो अपने शरीर की रचनाओं को ही नहीं जानता तब सब भुवनों की रचना को क्यों जानेगा। इसलिए वह मन्दमति है जो आपके विषय में कुतर्क करते हैं ॥ ६ ॥

हे प्रभो ! तीनों वेद, सांख्य, शास्त्र, योग, शैवमत, वैष्णवमत आदि अनेक मत भिन्न-भिन्न मार्ग बतलाते हैं। कोई कहता है कि यह मार्ग पथ्य (सरल) है, कोई दूसरे को सरल बतलाता है। इस प्रकार आपको प्राप्त करने के अनेक मत हैं। अपनी-अपनी भक्ति के अनुसार कोई सरल मार्ग से, कोई कठिन मार्ग से आपको प्राप्त करते हैं। जैसे समुद्र में गंगा सींची जाती है और कोई नदियां महान नदियों में मिलकर समुद्र में प्रवेश करती हैं, वैसे ही सबका ध्येय आपके चरणों की प्राप्ति ही है ॥७॥

हे भक्तों के वरदाता ! यद्यपि आप परिपूर्ण परमेश्वर हैं तथापि बूढ़ा बैल, खट्वांग (खाट का पाया) जैसा अस्त्र विशेष परसा बांधकर, चर्म, भस्म, सर्प तथा कपाल (खप्पर) यह आपके कुटुम्ब भरण-पोषण के साधन हैं। तब सबको आश्चर्य होता है कि जो देव ऐसा दरिद्री है, भला दूसरों को क्या दे सकता है ? सो ऐसा नहीं है, क्योंकि आपकी भृकुटी विशेष मात्र से दी हुई ऋद्धि-सिद्धियों को देवता लोग धारण करते हैं क्योंकि वह विषय वासना में मोहित हैं, परन्तु आप स्वात्मारामाम् (स्वप्रकाश, आनन्द स्वरूप ब्रह्म) हैं। आपका विषय मृग तृष्णा कैसे भ्रम जाल में डोल सकती है अर्थात् आप माया से परे हैं, आपको किसी वस्तु की आवश्यकता है ही नहीं ॥८॥

हे त्रिपुरासुर के नाशक कोई सांख्य शास्त्र के विद्वान् जगत् को नित्य मानते हैं तो कोई बौद्धमत वाले अनित्य एवं लौकिक नित्य और अनित्य दोनों मानते हैं। ऐसी दशा में जो कि भिन्न-भिन्न रूप जगत को मानते हुए भिन्न-भिन्न प्रकार से आपकी स्तुति करके लज्जित हुए तब भी मैं इतना ही वाचाल हूँ कि आपकी स्तुति करने में उद्यत हो रहा हूँ ॥९॥

हे गिरीश शंभो ! आपकी सेवा से क्या नहीं हो सकता है ? भगवान् ! सृष्टि के आदि में आपकी तेज पुंजमयी मूर्ति का माप करने के लिए यत्न पूर्वक ऊपर ब्रह्मा और नीचे विष्णु गये परन्तु उस ज्योतिर्लिङ्ग की थाह नहीं मिली, तब अनन्त श्रद्धा भक्ति से उन्होंने आपकी स्तुति की, तब आप स्वयं स्थिर हो गये और आपकी थाह लग गयी। इससे यह सिद्ध हुआ कि आपकी स्तुति अवश्य फलदायक होती है ॥१०॥

हे त्रिपुरासुर के नाशक शंभो ! रावण ने जो आपके चरण कमलों में अपने नौ मस्तक रूप कमल पुष्प की श्रेणी को बलिरूप में चढ़ा दिया था, उसकी उसी निर्मल भक्ति के प्रभाव से तीनों लोकों में उसके बैर का कारण भी कोई नहीं रह सका। यानी उसने इन्द्रादि सब देवों को भी जीत लिया था, तब उसकी बीस भुजाओं में रणककण्डू बनी ही रहती थी। तात्पर्य यह है कि कोई लड़ने वाला नहीं रहने से भुजाओं में खाज चलती रहती थी। इतनी बड़ी शक्ति प्राप्त करना आपकी भक्ति का ही फल था ॥११॥

हे प्रभो ! आपकी सेवा से भुजाओं में बल प्राप्त

करके वह आपके ही कैलाश पर्वत को लंका में उठा कर ले जाने की नीयत से उठाने में पराक्रम दिखलाने वाले रावण को पाताल में शरण नहीं मिल सकी। क्योंकि आपने धीरे से उसको अपने अंगूठे से दवा दिया, तब वह इतना नीचे जाने लगा कि पाताल तक पहुँच गया। यह सच है कि दुष्ट मनुष्य जब बढ़ जाता है तो वह किसी को भी यहां तक अपनी बुद्धि के कारण देव को भी कुछ नहीं समझता ॥१२॥

हे वरद ! पहले बाणासुर ने इन्द्र की सम्पत्ति को भी नीचा कर दिया और समस्त त्रिभुवन निवासियों को सेवकों के समान बना लिया था। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि वह आपका प्रधान भक्त था। वास्तव में आपके चरणों में किया हुआ नमस्कार किसकी उन्नति नहीं कर देता है अर्थात् भक्तों की सदैव उन्नति होती रहती है ॥१३॥

हे भगवन् ! समुद्र मंथन से जब कालकूट नामक महाविष निकला तब ब्रह्मा, विष्णु आदि सब भयभीत

ब्रह्मांड के नाश की आशंका से चकित सुरासरों पर तथा समस्त ब्रह्मांड पर कृपा करके आपने उस महाविष का पान कर लिया। इस कारण आपके गले का रंग काला हो गया, तो भी क्या वह कालापन आपकी शोभा को नहीं बढ़ा रहा है। किन्तु उसमें आपकी शोभा ही बढ़ी है। हे भगवन् ! संसार के भय को दूर करने का जिनका व्यसन ही है उनके यहां विकार भी शोभाजनक हो जाता है ॥१४॥

हे ईश ! जिस कामदेव के बाणों ने सुर, असुर तथा मनुष्य आदि समस्त प्राणियों को जीत लिया, अर्थात् कहीं पर भी असफल नहीं रहा, ऐसे अस्त्र वाला कामदेव घमण्ड के मारे आपको भी अन्य देवताओं के समान समझकर मोहित करने आया। पर फल यह हुआ कि स्मरण करने योग्य हो गया, यानी आपकी क्रोधाग्नि में भस्म हो गया। सच है, जितेन्द्रियों का अनादर कभी भी कल्याणकारी नहीं होता ॥१५॥

हे ईश ! आप यद्यपि जगत् की रक्षा के लिये नृत्य करते हैं तो भी आपके नाचते समय पृथ्वी संकट में पड़

जाती है कि कहीं नीचे न चली जाऊं। आपकी घूमती हुई सुन्दर सरीखी भुजाओं की चोटों से तारागण भी पीड़ित हो जाते हैं तथा खुली हुई जटाओं से बराबर ताड़ित स्वर्गलोक का तट प्रदेश भी दुखी-सा हो जाता है क्योंकि आपकी प्रभुता भी उल्टी ही है। इसका कारण यह बतलाया जाता है कि एक राक्षस ने भोले शंकर जी से वरदान पा लिया था कि सायंकाल में मुझे अपार शक्ति आ जावे। उस वरदान के घमण्ड में आकर वह संसार के नाश के लिये उतारू हो जाता है, तब शिवजी उसे अपने ताण्डव नृत्य में फांस लेते हैं॥१६॥

हे ईश! आकाश में व्याप्त तथा तारागणों की चमक से चमकता हुआ फेन वाला वह आकाश गंगा का प्रवाह आपके मस्तक में छोटी-सी बूंद जैसा दिखाई देता है। जिस प्रवाह ने इस संसार के सातों सागरों को भर रखा है और जिससे यह पृथ्वी समुद्र की परिधि वाली दिखाई देती है इसी से यह सिद्ध हो रहा है कि आपकी दिव्य मूर्ति की महिमा भी वर्णनातीत है। तात्पर्य यह है कि भागीरथ की प्रार्थना पर ब्रह्मा जी ने जब अपने

कमण्डल से गंगा का प्रवाह पृथ्वी पर गिराया तब वह स्वाभिमान से चक्कर काटती हुई वृहदाकार में नीचे उतरी, पर आपके रूप से मुग्ध होकर आपकी जटा में रुक गई थी ॥१७॥

हे शिव ! त्रिपुरासुर बड़ा भयानक होने पर भी आपके सामने तिनके के समान था, परन्तु उसको जलाने के लिए आपने इतना आडम्बर किया कि पृथ्वी को रथ बनाया, ब्रह्मा जी को सारथी, सुमेरु पर्वत को धनुष, सूर्य चन्द्रमा को चक्र तथा विष्णु भगवान् को बाण बनाया। यथार्थ में बात यह है कि पूर्ण शक्तिशाली लोग अपने वशवर्तियों के साथ मनुष्य लीला करते हुए भी परतन्त्र नहीं कहे जाते ॥१८॥

हे त्रिपुर हर भगवान् ! श्री विष्णु भगवान् ने आपके चरणों में एक सहस्र कमल के पुष्पों की भेंट चढ़ाई थी। उनमें से आपने एक कमल उनकी परीक्षार्थ छिपा दिया। तब भगवान ने नियम भंग के भय से अपने नेत्र रूपी कमल को उखाड़ कर चढ़ा दिया। इसी उत्कट भक्ति

का फल सुदर्शन चक्र है जो कि सारे संसार की रक्षा के लिए सदा जागृत रहता है ॥१६॥

हे भगवन्। यज्ञ करने वाले यजमान आपको यज्ञों के फल देने में साक्षी समझ कर तथा वेद वाक्यों में श्रद्धा रखकर यज्ञ कर्म करने के तत्पर होते हैं। क्योंकि उनका विश्वास है कि यज्ञ कर्म के नष्ट हो जाने पर भी आप फलदाता तो सदा ही जागते रहते हैं। यदि ऐसा मान भी लें कि कर्म का फल तो मिलता ही है, तो भी हे प्रभो! भला नष्ट हुआ कर्म चैतन्य पुरुष की आराधना के बिना कहां फल दे सकता है? अथवा यों भी मान लें तो भी आपकी भक्ति से उसके अशुभ कर्म गिर जाते हैं और उसे सांसारिक सुख मिल जाता। यानि आप विधाता के लेख को भी मिटा सकते हैं ॥२०॥

हे भक्तों को शरण देने वाले महेश्वर! दक्ष ने पहले यज्ञ किया था तब वह संयम प्रजापति यानि परिपूर्ण देह धारियों का स्वामी था। कर्म काण्ड में निपुण था, त्रिकालदर्शी भृगु आदि महर्षि उसके ऋतित्वज थे, सम्पूर्ण देवगण सदस्य थे, तो भी आपकी अवज्ञा के कारण उस

का यज्ञ नष्ट हो गया। आप स्वयं यज्ञों के स्वर्गादि फल-दाता हैं परन्तु आपके अपमान से वह अपने यज्ञ के नाश का कारण स्वयं बना। यह सच है कि यज्ञ के फल देने वाले के प्रति अश्रद्धा होने से यज्ञ शुभ फलदायक न होकर, नाश का कारण बन जाते हैं। जैसा कि कहा है नास्ति यज्ञोसमो रिपुः ॥२१॥

हे नाथ ! प्रजापति (ब्रह्मा जी का वेद) अपनी पुत्री वाणी के पीछे दौड़ता है और मृगशिर के तीन तारे हैं उनका रूप हिरणियों जैसा है उसके पीछे आर्द्रा नक्षत्र बाण के आकार का है इसी की उत्प्रेरणा कवि द्वारा वर्णित वाणी (सरस्वती) ब्रह्मा जी की बोली है। संसार में भी मुख से उत्पन्न बोली को कोई पुत्री नहीं मानता है। इसी प्रकार एक जगह और ऐसा ही वर्णन आता है कि प्रजापति (सूर्य) अपनी पुत्री ऊषा (पूर्व दिशा की पीली कांति) के पीछे-पीछे दौड़ता है पर वहां भी कोरी कल्पना ही है। ऊषा सूर्य की पुत्री मान ली है। पहले ऊषा आती है उसके बाद सूर्य उगता है ॥२२॥

हे यम नियमादि अष्टांग योगपरायण ! पार्वती ने

अपने शरीर की सुन्दरता से जब आपकी ओर देखा तो उसी समय कामदेव ने परम योगी आपको वश में करने के लिए धनुष उठाया था, तब उस धनुधारी को तिनके के समान जलते हुए देखकर भी पार्वती आधी देह में धारण करने के कारण आप महायोगी को स्त्रैण (स्त्री में आसक्त) मानती हैं तो यह उनकी भूल है। सच युवतियां स्वभाव से ही भोली हुआ करती हैं क्योंकि भोलापन उनका भूषण है, वास्तव में आप तो परम योगी हैं ॥२३॥

हे कामदेव के नाशक ! आप चाहे श्मशानों में क्रीड़ा करते हैं, भूत-प्रेतों को साथ रखते हैं, मानव शरीरों (मनुष्यों अस्थियों) की माला पहनते हैं इस प्रकार आपका स्वभाव चाहे अमंगल रूप ही क्यों न हो, किन्तु ये वरदान आप अपने स्मरण करने वाले भक्तों के लिए मंगल करना आपका कार्य है ॥२४॥

हे वरद ! मन को बाहरी व्यापारों से रोक कर विधिपूर्वक वायु को ग्रहण करने वाले यानि प्राणायाम के अभ्यासी अमृत सरोवर में डुबकी लगाने के समान

आनन्द का अनुभव करते हुए सच्चिदानन्द स्वरूप जिस परम तत्त्व का अपने हृदय मन्दिर में ध्यान करते हैं, वह आप ही हैं ॥२५॥

हे प्रभो ! आप ही सूर्य, चन्द्र, वायु, अग्नि, जल, आकाश तथा पृथ्वी रूप हो और आप क्षेत्रज्ञ आत्मा भी हो। इस प्रकार परिणित बुद्धि वाले माप करके आपको मानते हैं, परन्तु हे भगवान् ! मैं नहीं जानता कि संसार में ऐसा कौनसा पदार्थ है, जो आप नहीं हैं अर्थात् आप सर्व स्वरूप हैं और सर्वत्र व्यापक हैं ॥२६॥

हे भक्तों के अभय देने वाले ! ॐ यह पद तीनों वेदों, जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति इन तीनों वृत्तियों एवं तीनों लोकों, तीनों देवताओं को अपने स्वरूप में धारण करता हुआ ॐ का कर्मधारय समास के रूप में अथवा अलग अलग प्रकार आकार उकार मकार के रूप में प्रतिभासित हो रहा है, वही ॐ इन तीन से परे विकार हीन चौथा अखण्ड चैतन्य जो रूप है उसको अणु स्वरूप हृदय स्पंदन की ध्वनियों में सदा गाता रहता है ॥२७॥

हे भगवन् देव ! भव, शर्व, रुद्र, पशुपति, उग्र सह

महान् यानि महादेव आदि भूमि तथा ईशान यह जो आपके आठ नाम हैं इन प्रत्येक नामों के गुणगान में देव पुराणादि भी पूर्णरूप से लगे रहते हैं। हे प्रभो! इस प्रकार के आपके पूजन में मैं अपने को असमर्थ जान कर केवल आपके इस तेज का मन, वाणी एवं शरीर से ही केवल नमस्कार कर रहा हूँ ॥२८॥

हे वननिधियों में विहार करने वाले! आप हमारे निकटवर्ती तथा दूरवर्ती भी हैं, आपको नमस्कार है। हे कामदेव के नाशक! आप छोटे से छोटे तथा बड़े से बड़े हैं ऐसे आपको नमस्कार है। हे त्रिनयन! आप अति वृद्ध एवं अति युवा भी हैं, ऐसे आपको नमस्कार है। हे भगवान्! आप सर्व संसार रूप हो और सर्व नाम से विख्यात हो, ऐसे आपके लिए नमस्कार है ॥२९॥

हे भगवन्! संसार रचना के समय बिल्कुल रजो-गुणधारी ब्रह्मा भी आप हो। जीव मात्र को सुख देने के लिये सत्व गुण प्रधान भगवान् विष्णु भी आप हो और प्रलयकाल में अत्यन्त तमोगुण धारण कर उसके संहारक भी आप हो। इस प्रकार अनेक रूपधारी आपको बारम्बार नमस्कार है, सतत नमस्कार है ॥३०॥

हे वरद ! निरन्तर क्लेश युक्त कहां हमारा क्षुद्र चित्त और कहां आपकी बढ़ी-चढ़ी प्रत्येक गुणों की सीमा का उलंघन करने वाली सिद्धियां तो भला आपकी स्तुति कैसे करूं ? इस प्रकार चकित हुए मुझ मन्दमति को आपके चरणों की भक्ति ही गुणगान में लगा रही है और इस लिये यह वचन रूपी पुष्पों का हार आपके चरणों में चढ़ा रहा हूँ ॥३१॥

हे ईश ! आपके गुण इतने अपार हैं कि यदि काले पर्वत के समान परिमाण वाली स्याही हो और उसे समुद्र दवात में घोलकर कल्पवृक्ष की शाखाओं की कलम से सारी पृथ्वी रूपी कागज पर साक्षात् सरस्वती भी आपके गुणगान लिखने बैठे और निरन्तर लिखती रहें, तो भी आपके गुणों का पार नहीं पा सकती, तो हमारे जैसे क्षुद्र मनुष्यों की तो बात ही क्या है ॥३२॥

सुर, असुर तथा मुनीन्द्रों से पूजित तथा ललाट में चन्द्रमा को धारण करने वाले तथा जिनके गुणों की महिमा यहाँ एक माला के रूप में गूंथी गई है, ऐसे

निर्गुण ईश्वर के इस सुन्दर स्तोत्र को पुष्पदन्त नामक यक्षराज ने इसे शिखरिणी छन्द में बनाया है ॥३३॥

जो शुद्ध चित्त वाला मनुष्य परम भक्ति से श्री महादेव जी के परम स्तोत्र का प्रतिदिन पाठ करता है, वह अन्त में शिव लोक में जाकर रुद्रों के समान हो जाता है और इस लोक में अतीत धन, आयु, पुत्र एवं यश को प्राप्त करता है यानि उसका इस लोक और परलोक में कल्याण हो जाता है ॥३४॥

श्री महादेव जी से बढ़कर कोई देव नहीं है महिम्न स्तोत्र से बढ़कर कोई स्तोत्र नहीं है। अघोर मन्त्र से बढ़कर कोई मन्त्र नहीं है और गुरु से बढ़कर दूसरा कोई तत्व नहीं है ॥३५॥

दीक्षा (ज्ञान प्राप्ति के लिए गुरु से मन्त्र लेना) एवं दान, तप, तीर्थयात्रा, ज्ञान एवं यज्ञ आदि जितने भी कर्म हैं वे सब मिलाकर इस महिम्न स्तोत्र के पाठ की सोलहवीं कला के भी समान नहीं हैं ॥३६॥

कुसुमदशन यानि पुष्पदन्त नाम वाले सब गंधर्वों के राजा, बाल चन्द्रमा को ललाट में धारण करने वाले

महादेव के भक्त थे। वह अपराधजन्य रोष के कारण अपने महत्त्व से गिर गये तब उन्होंने अपने उद्धार के लिए श्री शिव जी की महिमा का यह दिव्य स्तोत्र बनाया ॥३७॥

अनुपम, मन को हरनेवाला, परम मधुर शिव स्वरूप यह समाप्ति पर्यन्त ईश्वर वर्णनात्मक पवित्र स्तोत्र गन्धर्वराज से कहा गया ॥३८॥

श्रीपुष्पदन्त जी का बनाया हुआ यह अमोघ (कभी व्यर्थ न जाने वाला), देव और मुनियों से आदरणीय, स्वर्ग और मोक्ष को देने वाला स्तोत्र है। यदि मनुष्य एकाग्रचित होकर एवं हाथ जोड़कर इसको पढ़े तो किन्नर रमणियों से प्रशंसा पाता हुआ वह शिवजी के पास कैलाश में पहुँच जाता है ॥३९॥

श्री पुष्पदन्त जी के मुखारविन्द से निकले हुये, सब पापों के नाशक शिवजी के इस प्यारे स्तोत्र का कण्ठस्थ तथा एकाग्र मन से पाठ करने से भूतनाथ भगवान शिवजी बहुत प्रसन्न होते हैं ॥४०॥

यह वाणी रूपी पूजा श्री शंकर भगवान् के चरणों

में सादर समर्पित है। इससे श्री सदाशिव कल्याणकर्ता भगवान् मुझ पर प्रसन्न होवें ॥४१॥

ये श्लोक किन्हीं-किन्हीं पुस्तकों में अधिक है। उपमा रहित एवम् मन को लुभाने वाले परम मधुर शिव स्वरूप समाप्ति यन्त्र ईश्वर वर्णनात्मक इस पवित्र स्तोत्र को पुष्पदन्त गन्धर्वराज ने बनाया है।

हे महेश्वर ! आप कैसे हैं ? आपका कैसा रूप है ? कितने गुण हैं इत्यादि मैं कुछ नहीं जानता। अस्तु आप जैसे भी हैं वैसे ही के लिए नमस्कार है ॥४२॥

जो कोई मनुष्य प्रतिदिन एक काल, दो काल या तीनों समय इस स्तोत्र का पाठ करता है वह सम्पूर्ण पापों से छुटकारा पाकर श्री शिवजी के लोक में सम्मान प्राप्त करता है।

इति पुष्पदन्त द्वारा शिव महिमा स्तोत्र भाषानुवाद समाप्त

भाग ५

भूत पिशाच आदि वशीकरण मंत्र

ओं ह्रां ह्रीं क्लीं नमः।

विधि—इस छः अक्षर के मन्त्र को प्रातः उठकर शौचादि से निवृत होकर पीपल के वृक्ष के नीचे बैठकर ३२ सहस्र जपो। घी दूध का देवी को नैवेद्य दो। इस से यह मन्त्र सिद्ध होगा और भूत प्रेत पिशाच आदि वशीभूत होंगे। पिशाच यक्षों का आधिपत्य उसको प्राप्त होता है।

केले की फली प्राप्ति मन्त्र

ओं नमो ज्वाला माणिक्य भूषणायै नमः।

विधि—मंगलवार को सायंकाल के समय अपने घर के द्वार की बैठक में बैठकर इस मन्त्र का १५०० जप करो। ऐसा करने से देवी प्रसन्न होगी। यदि घी, दूध, दही आदि से प्रार्थना की जावे तो देवी प्रसन्न होकर केले की फली देती है।

अन्न प्राप्ति मन्त्र

ओं नमो मातंगेश्वर्यै नमः ।

विधि—रविवार के दिन सुबह उठकर शौचादि से निवृत होने के पश्चात् कृषि भूमि में चले जाओ। वहां की धूलि अपने सर्व अंगों पर लेपन करो और उपरोक्त मन्त्र का ३५०० बार जप करो। इसके पीछे सुगन्धित द्रव्य का हवन करने से देवी प्रसन्न होती है और प्रसन्न होकर प्रतिदिन दस सहस्र पोशाग आदि योग्य अन्न देती है।

अश्वादि प्राप्ति मन्त्र

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं मातंगेश्वर्यै नमो नमः ।

विधि—सायंकाल के समय अपने घर के दीपक के सन्मुख बैठकर इस मन्त्र का एक लाख जप करो। जप करने के बाद राल का दशांश हवन करो। इससे देवी प्रसन्न होकर स्त्री भाव में स्त्री, राजलक्ष्मी, महिषी के समूह तथा अश्वादि की प्राप्ति रूप सिद्धि होती है और हर प्रकार का बल आ जाता है।

त्रिलोकी की बात जानने का मन्त्र

ओं क्रीं भगवतीभ्यो नमः ।

विधि–यह नव अक्षर का मन्त्र है स्वयं तीन पात्र रखकर इसका जप करो। इससे देवी प्रसन्न होती है और तीन लोक की बात कान में कहती है। नाना प्रकार के पुष्प लाकर देती है।

अठारह प्रकार के धान्य प्राप्त करने का मन्त्र

ओं नमो भैरवाय स्वाहा।

विधि–यह नव अक्षर का मन्त्र है इसका ४०००० जप करो और जप करते समय दशांश गेहूँ का हवन करो तो अठारह प्रकार के धान्य प्राप्त होते हैं।

उच्छिष्ट गणेश सिद्धि मन्त्र

ओं नमो हस्ति मखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट।
महात्मने क्राधीं हां घे घे उच्छिष्ट स्वाहा॥

विधि–कड़वे नीम की जड़ लाकर एक अंगुल

की गणेश की प्रतिमा बनाओ। किसी मास की कृष्णपक्ष की अष्टमी से प्रारम्भ करके अमावस तक ५०० बार जप प्रतिदिन करो और स्वयं जूठे मुख होकर गणेश जी के आगे एक थाली में लाल चन्दन, पुष्प, अक्षत धरकर उनकी पूजा करो। जूठे ही मुख से जप आरम्भ करो। इस प्रकार ७ दिन करके आठवें दिन जूठे मुख से पंच खाद्य वस्तुओं की ५०० आहुति दें तब गणेशजी अभिलषित वस्तु देते हैं साधक की महिमा अधिक होती है जिस स्त्री की इच्छा हो उस पर गणेश बैठायें अर्थात् उसकी प्रतिमा पर गणेश जी को बिठला कर प्रतिदिन १०८ जप उपरोक्त मन्त्र का किया करें। इससे तीन दिन में उसका आकर्षण होता है। गणेश को उठाने पर वह फिर चली जायेगी। यदि फिर बुलाने की इच्छा हो तो फिर गणेश की मूर्ति को उस स्त्री की प्रतिमा पर रखकर मन्त्र का १०८ बार जप करो। इससे वह स्त्री फिर चली आयेगी। इसी प्रकार गणेश की मूर्ति को उठाने पर वह स्त्री फिर चली जावेगी। गणेश को उच्छिष्ट मुख आगे रखकर १०८ बार मन्त्र का जप करने से राजा वशीभूत होता है। गणेश को नदी में

ले जाकर प्रक्षालन करें फिर अपने मुख से चार बार प्रक्षालन कर उस गिरे जल में से कुछ पानी घड़े में रख लें। उसको जो पीते हैं यह सर्व वशीभूत होते हैं यह गणेश की मूर्ति बड़े काम की वस्तु है। इससे हर प्रकार के काम सिद्ध होते हैं। इसको भूलकर भी अपने से अलग करना बड़ी भारी चूक है।

इस गणेश की मूर्ति को द्वार पर अच्छे वृक्ष की शाखा में रखकर यथा विधि पूजन करें और उपर्युक्त मन्त्र का १०१ बार जप करें तो उस घर में अखण्डित अन्न होता है और यदि इन्हीं गणेश को तांबे या चाँदी के पात्र में रखकर तावीज बनवाया जावे और फिर कमर में बांधे तो स्त्री वशीभूत हो। शत्रुगण स्तम्भित होते हैं। यदि गणेश को हाथ में रखकर तावीज बनाया जाये और सोने के फूल इस पर चढ़ाये जावें और उसी हाथ में तलवार लेकर युद्ध किया जावे तो काल भी सम्मुख आवे तो भी हार जावे। यदि गणेश को किसी अन्न पर स्थापन करें और १०८ बार मन्त्र जपें तो उदर पूर्णार्थ अन्न मिले। गणेश

को हाथ में लेकर धोयें और फिर उस जल को यदि शत्रु का नाम लेकर पिया जावे तो शत्रु का नाश होगा।

अग्नि चेटक मन्त्र

ॐ स्वाधिष्ठानम् मणि पुरदहनाय रुद्र रूपिणे स्वाहा।

विधि—यह बीस अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र को बारह सहस्र जपने से सिद्धि होती है। दशांश हवन कर उसकी भस्म (राख) को मंत्र पढ़कर जिसके घर में डाले वह नष्ट होता है। शत्रु का उच्चाटन होता है। इसको जिस पुरुष का नाम लेकर भोजपत्र पर लिखकर अग्नि में डाला जावे उस पुरुष को दाह रहे और अन्तकाल तक पीड़ित रहे।

महेन्द्र यक्षिणी साधन मन्त्र

ॐ महेन्द्री हुलुकुल दंसः स्वाहा।

विधि—उपवास करके इन्द्र धनुष के उदय काल से निगुंण्डी के वृक्ष के नीचे बैठकर एक लाख जप करो और जप करते समय दशांश हवन करो। इससे माहेन्द्री

देवी पाताल से प्रसन्न होकर सिद्धि लाकर देती है और भेंट भोग लगाती है।

शंखणी यक्षिणी साधन मन्त्र

ॐ शंख धारिणी शंख धरणे ह्रां ह्रीं क्लीं क्लीं श्री स्वाहा।

विधि—प्रातःकाल शौच आदि आवश्यक कार्यों से निश्चिन्त होकर बड़ के वृक्ष के नीचे आसन लगाकर बैठ जाओ और इस मन्त्र का एक लाख जप करो अथवा सूर्योदय से १००००० जप करो। इससे देवी प्रसन्न होकर पाँच दीनार प्रतिदिन देती है और भी जिस वस्तु की प्रार्थना की जावे वह भी देवी अवश्य देवे।

चन्द्रिका यक्षिणी साधन मन्त्र

ॐ ह्रीं चन्द्रिके हंस स्वाहा।

विधि—शुक्ल पक्ष की चाँदनी में इस मन्त्र का विधि पूर्वक एक लाख जप करो। इससे चन्द्रिका देवी अति प्रसन्न होती है और अपनी प्रसन्नता से साधक को अमृत देकर तृप्त करती है। जिसको पान करने से

पुरुष सदैव जीता रहता है। यही वह अमृत है जो देवताओं को भी प्राप्त नहीं होता।

मदन मेखला यक्षिणी साधन मन्त्र

ओं हूँ मदन मेखले नमः स्वाहा।

विधि—मंगलवार के दिन प्रातः उठकर सूर्योदय से पूर्व शौचादि आवश्यक कार्यों से निश्चिन्त हो जाओ। कुछ काल के लिए ईश्वर का ध्यान धरो और उससे अपने कार्य की पूर्ति के लिए प्रार्थना करो। इसके बाद मधु वृक्ष के नीचे बैठकर उपरोक्त मन्त्र का जप करो। चौदह दिन तक प्रतिदिन इसी प्रकार इस मन्त्र का एक लाख जप पूरा करो। इससे मदन मेखला देवी प्रसन्न होगी और आपको एक अंजन देगी जिससे आप भूत भविष्य के ज्ञानी हो जावेंगे।

विकला यक्षिणी साधन मन्त्र

ओं विकले ऐं ह्रीं श्रीं स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र का तीन महीने घर में स्थित होकर एक लाख जप करें और कनेर के फूलों का घृत के सहित

दशांश हवन करें अथवा सुराधान्य का दशांश होम करें तो इससे त्रिकाल यक्षिणी सिद्ध होगी और आपका हर प्रकार का काम करेगी और सभी इच्छायें पूर्ण कर देगी।

लक्ष्मी यक्षिणी साधन मन्त्र

ओं ऐं लक्ष्मी व श्री कमल धारिणी हरा स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र का घर बैठकर एक लाख जप करो। जप मंगलवार से आरम्भ करो। जप करने के बाद कनेर पुष्प और घृत का दशांश हवन करो। इससे लक्ष्मी देवी प्रसन्न होकर रसायन देती है।

मानिनी यक्षिणी साधन मन्त्र

ओं ऐं मानिनी ह्रीं कद्मे हि सुन्दरि हंस हंस स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र को चौराहे में स्थित होकर सवा लाख बार जपो। लाल कमलों का दशांश घी के साथ हवन करो। इससे मानिनी देवी प्रसन्न होकर दिव्य खाण्डा देती है जिससे साधक अखण्ड राज्य पाता है। लाल फूल और घी के दशांश होम से देवी खड्ग देती

है जिससे साधक शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है और भी कई प्रकार की वस्तु मांगने पर देती है।

विलासिनी यक्षिणी साधन मन्त्र

ॐ वरूजाक्ष विलासिनी आगच्छागच्छ ह्रीं प्रिय में भव क्लीं स्वाहा।

विधि—नदी के किनारे आसन जमाकर बैठ जाओ और इस मन्त्र का ५०००० जप करो। जप करते समय घृत गूगल का दशांश हवन करो। इससे देवी प्रसन्न होती हैं और सौभाग्य दान देती है।

नटी यक्षिणी साधन मन्त्र

ॐ ह्रीं नटि महा नटि स्वरूपवती स्वाहा।

विधि—कार्तिक की पूर्णिमा को अशोक वृक्ष के नीचे जाकर वहां चन्दन से सुन्दर मण्डल बनाकर देवी की पूजा करे। रात्रि के समय भोजन करो। पूजा करके आधी रात को मन्त्र का जप करो। जब नटी देवी आये चन्दन की माला पहिनाओ। इससे देवी अति प्रसन्न होगी और आपको मनवांछित फल देगी।

कामेश्वरी वशीकरण साधन मन्त्र

ॐ ह्रीं आगच्छगच्छ कामेश्वरी स्वाहा।

विधि—प्रातःकाल पवित्र हो शुद्ध आसन पर बैठकर तीनों संध्याओं में एक-एक सहस्र मन्त्र जपो और पुष्प, घी, धूप, नैवेद्य से रात्रि को पूजन करो। इससे प्रसन्न होकर देवी आधी रात के समय आकर दिव्यरस रसायन देती है।

स्वर्ण रेखा यक्षिणी साधन मन्त्र

अ बर कर शाल्मले सुवर्ण रेखे स्वाहा।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ हयः स्वाहा॥

विधि—एक लिंग को प्रेम सहित पठङ्ग विधि से पूजन करके पूर्व संध्या से आरम्भ करके कृष्ण पक्ष तक मन्त्र का जाप करो और एक मास पर्यन्त इसी प्रकार जपते रहो। अन्त में रात्रि को भोजन करो। इसके पीछे आधी रात के समय देवी आकर अलंकारादि प्रदान करती है। छः मास इसी प्रकार पूजन करने से देवी दिव्य देह कर देती है जिससे साधक का यह शरीर नाश होने नहीं

जाता। ॐ ह्रां आदि मन्त्र से देवी प्रसन्न होकर दरिद्रता आदि दुःखों का नाश करती है।

नित्य सहस्र दीनार प्राप्ति मन्त्र

ॐ ह्रीं अनुरागिनी मैथुन प्रिये स्वाहा।

विधि—भोजपत्र पर कुमकुम से देवी की मूर्ति लिखो फिर प्रतिपदा के दिन से आरम्भ करके पूर्णिमा पर्यन्त तीनों काल के पूजा करके नित्य सहस्र मन्त्र जपो। इससे अर्ध रात्रि के समय प्रसन्न मुखी देवी आती है और नित्यप्रति सहस्र दीनार देती है।

पद्मकेशी यक्षिणी साधन मन्त्र

ॐ ह्रीं नख केशी कनकवती स्वाहा।

विधि—मन्त्री गन्धर्व के घर जाकर २१ दिन तक देवी की पूजा करके एक सहस्र मन्त्र प्रतिदिन जपो। यथा विधि पूजा करो और रात को भोजन करो। एक चित्त रहो। आधी रात को देवी आकर कामना पूर्ण करती है।

छाया पुरुष साधन विधि

प्रिय पाठकगण ! अब हम आपको छाया पुरुष साधन विधि से अवगत कराते हैं, क्योंकि केवल इस एक ही विधि से कई प्रकार के असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाते हैं। इससे साधक भूत, भविष्य; वर्तमान का ज्ञाता बन जाता है। यह विद्या श्री शिवजी महाराज की कथन की हुई है। इसका साधन हर एक प्राणी की मौत से कई मास पहले उसको सूचित कर सकता है। प्रत्येक प्राणी २१६०० श्वास दिन रात में लेते हैं। इस विद्या द्वारा हर एक प्राणी इसके गुप्त भेदों से ज्ञानवान हो सकता है।

स्वरोदय भी छाया पुरुष का एक लक्षण है। इस लिये पहले इसके ज्ञान से सूचित हों।

स्वरोदय

स्वरोदय के मत के अनुसार अब काल ज्ञान को कहते हैं। इस शरीर रूपी नगर में रक्षा करने वाला केवल पवन रूपी पुरुष है। उसका १० अंगुल करके प्रवेश

और बारह अंगुल करके निगम होता है। इससे न्यून अथवा अधिक होना अरिष्ट होने का चिन्ह है। यदि स्वर का उदय नासिका के दाहिने मार्ग से हो और वाम मार्ग से अस्त हो तो यह अत्यन्त गुणदाता है। इससे विपरीत हो अर्थात् वाम स्वर से उदय और दाहिने स्वर से अस्त होवे तो विनाश करता है।

यदि किसी पुरुष का सदैव दाहिना स्वर चले और वाम स्वर कभी न चले तो ऐसे प्राणी की १५ दिवस में मौत होवे। यह काल ज्ञान के जानने वाले महात्माओं का कथन है।

एक स्वर अधिक चलना

जिस प्राणी का एक स्वर एक मास या छः मास या एक पक्ष तथा तीन महीने अथवा पाँच रात बराबर चले तो उस प्राणी की मौत निस्सन्देह होवे।

शुक्ल पक्ष में स्वर ज्ञान

शुक्ल पक्ष में प्रथम वाम स्वर चलता है और पश्चात् दाहिना स्वर चलता है। इसी प्रकार कृष्ण पक्ष में प्रथम दाहिना स्वर चलता है और बाद में वाम स्वर

चलता है। यह स्वर शुक्ल व कृष्ण पक्षों में तीन-तीन दिवस पर्यन्त चलते हैं।

सूर्य स्वर ज्ञान

यह पांच भूतों से बना हुआ देह रूपी दीपक चन्द्र-स्वरूप तेल से भरा हुआ है। इस दीपक को सूर्य स्वरूप वाली पवन दुखदायी है क्योंकि बिना रक्षा किये इसका स्थिर रहना असम्भव है।

इस शरीर में आत्मारूपी दीपक है। सूर्य स्वरूप ज्योति और आयुरूपी तेल भरा है। इसमें काया रूपी कज्जल है और इस देह की रेखा प्राणी की वृत्ति है।

अरुन्धती ध्रुव आदि का न दीख पड़ना

जिस प्राणी को अरुन्धती, ध्रुव, विष्णु त्रिपद और चतुर्थ मातृ मण्डल न दीख पड़े, उस पुरुष को आयुहीन जानो अर्थात् उसकी आयु खतम हुई जानो।

काल ज्ञान के ज्ञानी अरुन्धती जीभ को कहते हैं। नासिका के अग्र-भाग को ध्रुव कहते हैं। दोनों भवों के मध्य स्थान को विष्णुपद और दोनों भवों को मातृ मण्डल कहते हैं। अर्थात् जो प्राणी मरने के नजदीक होता है वह इसको नहीं देख सकता।

मृत्यु शैया पर पड़ा हुआ पुरुष इन सर्व वस्तुओं में से किसी एक को भी नहीं देख सकता।

सूर्यादि प्रतिबिम्ब विचार

जो रोगी सूर्य अथवा चन्द्र के प्रतिबिम्ब को जल में देखे और इनके पूर्व, उत्तर, दक्षिण अथवा पश्चिम की ओर छिद्र देखे तो इस प्रकार का रोगी क्रम से छः, तीन, दो और एक मास जीवे। यदि सूर्य चन्द्र का प्रतिबिम्ब धूम्र वर्ण दीखे तो दस दिन जीवे। उस प्रतिबिम्ब के पश्चिम की ओर ज्वाला दीख पड़े तो तत्काल मौत होवे, ऐसा काल ज्ञानियों का मत है।

मरण में अरिष्ट को मुख्यतत्व

जैसे पुष्प होने वाले फल का बोधक अर्थात् वृक्ष में फूल के आते ही अनुमान द्वारा निश्चय होता है कि अब इसमें फल भी आवेगा, ठीक इसी प्रकार अरिष्ट लक्षण द्वारा होनहार मौत का निश्चय होता है। अनेक पुष्पों की अवस्था में फल नहीं आता है। इसी प्रकार कई फल भी बिना पुष्प के आ जाते हैं जैसे गूलर और पीपल। इसी प्रकार कई प्राणी अरिष्ट होने और मृत्यु के

किसी लक्षण को प्रकट किये विना भी काल का ग्रास हो जाता है। ईश्वर की लीला निराली है जिसको जानना बड़ा कठिन है।

परन्तु अरिष्ट चिन्ह प्रकट होने की अवस्था में मौत अवश्य होवे। वह मौत ही नहीं जिसमें प्रथम अग्नि लक्षण न हो। अरिष्ट अवश्य होता है। आगे उसका बोध होना या न होना प्राणी की बुद्धि पर है। यदि कोई काल ज्ञानी होगा तो उसको पता लग जावेगा और यदि कोई साधारण प्राणी होगा तो उसको क्या बोध होगा ? बोध न होने की हालत में प्राणी कहते हैं कि अमुक प्राणी की मौत बिना अरिष्ट चिन्ह प्रकट किये हुए हो गई परन्तु वास्तव में चिन्ह अश्वमेव प्रकट होते हैं। वास्तव में ऐसा कहने वाले धोखा खाते हैं और जिन लक्षणों की आरोग्यता के लक्षण वतलाते हैं वही अरिष्ता के चिन्ह होते हैं, जिससे प्राणी की मौत हो जाती है।

अरिष्ट लक्षण

किसी किसी की मृत्यु के पूर्व अरिष्ट लक्षण भी सम्पूर्ण जाने नहीं जाते। इसका यह कारण है कि जो

समस्त उक्त लक्षण हैं वह अत्यन्त सूक्ष्म रूप मे उठते हैं अर्थात् शीघ्र ही एक लक्षण होने के पश्चात् दूसरा लक्षण होने लगता है। जिसका अनुमान मरने वाले रोगी को नहीं होता अर्थात् जिस प्रकार अरिष्ट का ज्ञान नहीं होता इससे यह निश्चय हुआ कि मौत के पहले यह अरिष्ट लक्षण अवश्य उत्पन्न तो होते हैं, परन्तु उस समय निश्चय नहीं होता। इसमें निश्चय न होने का कारण अज्ञानता अथवा यथार्थ निश्चयात्मक मन का न लगाना है।

गतायु पुरुष की चिकित्सा करना अवश्य व्यर्थ परिश्रम होता है। इसलिए वैद्य को समस्त अरिष्ट लक्षण का जानना अति जरूरी है।

पंचेन्द्रियां

अब हम पांच इन्द्रियों की अवस्था लिखते हैं कि इनमें से किसी एक के विपरीत होने का क्या अर्थ होता है। जिस प्राणी के शरीर के मानसिक, स्वभाव और प्रकृति यह तीनों पलट जावें तो उस प्राणी के यह मौत

के लक्षण हैं। यह बात तो संक्षेप से बताई गई है। अब प्रत्येक इन्द्री का हाल अलग-अलग लिखा जाता है। जिसमें प्रत्येक इन्द्री की प्रत्येक अवस्था का वर्णन किया जायेगा।

कर्णेन्द्री की विकृति

जो प्राणी विविध शब्द बोलना, गीत, पाठ, वाजे आदि और दिव्य (सिद्ध किन्नर आदि के) तथा समुद्र, या मेघ आदि के न होने पर इनका शब्द सुने अथवा इनके शब्दों को और ही शब्दों के समान सुने तथा गांव के शब्दों को वन के शब्द समान और वन के शब्दों को गांव के शब्द समान सुने अथवा शत्रु के वाक्य में प्रीति करे और माता, पिता, भाई, मित्रादि के शब्द को सुनकर कुपित हो अथवा सुनते-सुनते अकस्मात् न सुने ऐसे प्राणी को गतायु जानो। ये कर्णेन्द्री के चिन्ह हैं जिनसे किसी पुरुष की मौत का ज्ञान हो जाता है।

त्वचा की विकृति

इसका अर्थ है रोगी की स्पर्श शक्ति का विपरीत

हो जाना। अब हम आपको इस शक्ति की विपरीतता दिखाते हैं---जो प्राणी शीतल के समान अथवा शीतल पीड़ की देह में होने पर भी दाह के मारे पीड़ित हो। जिसका शरीर गर्म हो परन्तु शीत से थर २ कांपे और लकड़ी तलवार आदि की चोट लगने को तथा प्रत्यंगों के कट जाने को भी न जाने और इसी प्रकार अंगों व अंगों को धूल से आच्छादित जाने अथवा देह का वर्ण पलट जावे अथवा जिसके शरीर में काली लाल रेखा हो जावे। तत्काल स्नान करा दो और चन्दनादि लेप भी करवा दो इस प्रकार सुगन्धित शरीर वाले के शरीर पर नीली मक्खी चारों ओर से आकर बैठ जावे अथवा जिसकी देह में अकस्मात् सुगन्ध आने लगे तो ऐसे प्राणी की एक साल के भीतर ही अवश्यमेव मौत हो जावेगी।

रस परीक्षा

जो प्राणी खट्टे रस को मीठा और मीठे रस को खट्टा जाने और इसी प्रकार सर्व रसों को विपरीत जाने और मीठा और क्रम पूर्वक सेवन किये हुए मधुरादि रस

दोषों को बढ़ावे और जो विपरीत से सेवन करे हुए रस दोष और अग्नि की समानता करे अथात् हितकारी पदार्थों को उपद्रव करने वाले और उपद्रव करने वालों को हितकारी जाने, ऐसे प्राणी को गतायु जानो। वह कोई चन्द दिवस का मेहमान जानो।

सुगन्ध दुर्गन्ध विचार

जो प्राणी सुगन्ध को दुर्गन्ध और दुर्गन्ध को सुगंध समझे, अथवा जो सुगन्ध और दुर्गन्ध किसी को भी न जाने, उसे गत प्राण जाने। ऐसा प्राणी एक मास में ही यमलोक को जावे।

गर्मी सर्दी काल विचार

जो पुरुष गर्मी, सर्दी काल की अवस्था (प्रभात, निर्वात और वर्षादि) और दिशा इनकों तथा अन्य भाव द्रव्य, गुण, कर्मादिक को विपरीतता से ग्रहण करे। ऐसा पुरुष एक मास में मर जावे।

छाया विचार

ज़िस प्राणी को धूप, चांदनी आदि प्रकाश में, दर्पण, पसीने और जल में अपनी छाया न दीखे। यदि दीखे तो एक अंग रहित दीखे अथवा विकृत तथा अन्य तत्व (प्राणी) गधा, कुत्ता आदि की सी दीखे तथा अन्य तत्व काक, कंध, गीध, प्रेत, यक्ष, राक्षस, पिशाच, सर्प, नाग और मनुष्य इनकी छाया को विकृत देखे अथवा प्राणी धुआं रहित अग्नि का वर्ण मोर कण्ठ के समान नीला देखे तो ऐसे आतुर रोगी की मौत होवे। और यदि नीरोग्य प्राणी देखे तो रोगी होवे।

छाया विपरीतता

अब हम छाया विकृति यान्ति अध्याय की व्याख्या करेंगे। इस जगह छाया सब्द के बाद ही श्री तुष्ट्यादि की भी विपरीतता जाननी अर्थात् इनकी भी व्याख्या करेंगे।

अब छाया की विपरीतता दिखाते हैं कि जिस पुरुष के साथ काली, लाल, नीली और पीली छाया दीखे उसको गतप्राण जानना अर्थात् वह जल्द मारेगा।

* समाप्त *

राम प्रिंटिंग प्रेस, गली समोसान, फराशखाना दिल्ली-६

श्रीमद् भागवत् गीता १८ अध्याय
व महात्म्य सहित

इस पुस्तक में श्री कृष्ण भगवान ने श्री अर्जुन को कुरुक्षेत्र में जो ज्ञान व उपदेश दिये थे उनको अक्षरक्ष छापा गया है। इस गीता का नियमित रूप से रोजाना पाठ करने वालों को सदगति व मोक्ष निश्चित है। अतएव हर मनुष्य के लिए इसका पाठ करना आवश्यक है।

मूल्य १५) रुपये डाक खर्च ३)५० अलग।

वशीकरण मन्त्र

इस पुस्तक की सहायता से जिस स्त्री-पुरुष को अपने वशीभूत कर मन चाहा काम ले सकते हैं। आकर्षक सुरमा बनाने की क्रिया राजदरबार में विजय पाना, लड़ाई में शत्रुओं को नीचा दिखाना, अपने इष्ट मित्रों को मन्त्र वश दूर देश से बुलाना स्वर्गीय से बातचीत करना आदि बातों का वर्णन है।

मूल्य १५) रुपये डाक खर्च ३)५० अलग।

सचित्र करामात

इस किताब में योग विद्या के समस्त गुण मिसमरेजम हिप्नोटिज्म द्वारा दूसरे आदमी का रहस्य जानना, परदेश की बातों को एक स्थान पर क्षण मात्र में जान लेना, पृथ्वी में गढ़ा हुआ धन देखना, पशु पक्षियों की बोली पहचानना अन्तर्ध्यान होना, चाहे जितना हल्का या भारी हो जाना, मृत आत्माओं से बात चीत करना, यन्त्र व तन्त्र वशीकरण आदि का सरलता पूर्वक वर्णन है।

मूल्य १५ रुपये, डाक खर्च ३)५० अलग।

वी० पी० द्वारा पुस्तकें मंगवाने का पता :

अशोका प्रकाशन

४६ ६५ रहमान स्ट्रीट, चांदनी चौक, दिल्ली-६

सचित्र सिलाई कटाई शिक्षा

इसमें पहनने के जनाना, मर्दाना सब तरह के कपड़ों का काटना और सीना सिखाया गया है। आप इस किताब में छपे नक्शों की सहायता से कोट, पतलून, पजामा, सलवार, गरारा ब्लाऊज, बुशर्ट आदि काटकर स्वयं मशीन से सींकर तैयार कर सकते हैं। सैंकड़ों औरत और मर्द इस किताब को पढ़कर सफल दर्जी बन चुके हैं और टेलरिंग कालेज तक चला रहे हैं। सजिल्द पुस्तक की कीमत १५ रु० डाक खर्च ३)५० अलग।

नवीन वृहद् पाक विज्ञान

नाना प्रकार के स्वादिष्ट भोजन का कार्य बताने वाली यह किताब व्यंजन शास्त्र की अपूर्व किताब है। इस पुस्तक में भांति २ के भोजन, अचार, मुरब्बे, रायता, खीर, हलुवा, कुल्फी सूखे मुरब्बे बनाना, तरह-तरह के पकवान बनाने के सरल तरीके दिये गए हैं। किताब क्या है गृहस्थ के जीवन का साथी है। किताब में जितने खाने के पदार्थ हैं, उनके गुण व अवगुण भी बताये गये हैं। मू० १५ रु० डाक खर्च ३)५० अलग

असली बड़ा हारमोनियम गाइड

यह किताब अभी हाल में अपने कई दोस्तों के अनुभव से बहुत सा रुपया खर्च करके एक सुयोग्य मास्टर से बनवाकर प्रकाशित की है, इसमें बहुत सी नई-नई तर्जों के गायन राग रागनी, गजल, ठुमरी, दादरा, कव्वाली, सिनेमा गायन आदि की सरगम व नम्बरों से नये-नये कायदे से समझा कर इतनी भली प्रकार वर्णन किया गया है जिससे कि एक अनजान आदमी भी बिना किसी शिक्षक के बाजा बजाना सीख सकता है यदि इस किताब से बाजा बजाना न आये तो किताब की कीमत वापस कर देने की गारन्टी है। मूल्य १५) डाक खर्च ३)५० अलग।

वी० पी० द्वारा पुस्तकें मंगाने का पता :

अशोका प्रकाशन, ४६६५ रहमान स्ट्रीट, चांदनी चौक, दिल्ली-६

चीन बंगाल का जादू

इस पुस्तक में चीन व बंगाल देश के जादू तथा उसके उतार चढ़ाव की पूर्ण क्रिया लिखी गई है, इसके अतिरिक्त प्रेम आत्माओं से बात-चीत तथा उन से काम लेने का ढंग और भूत बिद्या द्वारा हर प्रकार के कार्य अपनी इच्छानुसार करवाने की विधि पूर्ण नीति से अंकित हैं। मूल्य १५) रुपगे डाक खर्च ३)५० अलग।

सचित्र मोटर ड्राइवरी शिक्षा

मोटर ड्राइवरी सीखने वालों के लिए एक अत्यन्त सहायक पुस्तक है। मोटर, कार, ट्रक आदि के प्रत्येक पुर्जे कार्य चित्रों द्वारा इस पुस्तक से जाना जा सकता है। तथा छोटी मोटी मरम्मत करना भी सीखा जा सकता है। मोटर ड्राइवरी सीखने के लिए अत्यन्त ही जरूरी पुस्तक है सजिल्द व सचित्र। पुस्तक का मूल्य २० मय डाक खर्च।

मोटर मैकेनिक शिक्षा

हिन्दी भाषा में यह अमूल्य पुस्तक जिसकी बर्षों से प्रतिक्षा की जा रही थी, छप कर तैयार है। इस पुस्तक में वर्तमान समय की फोर्ड, शेवरलेट, फियेट, हिन्दुस्तान, ऐम्बेसेडर आदि सभी मोटरकारों के इन्जनों बिजली तथा वायरिंग हर एक पुर्जे के नाम, काम व उसकी मरम्मत करना, चित्रों से युक्त यह पुस्तक इतने सरल ढंग से लिखी गई है कि कठिन से कठिन बात भी बड़ी आसानी से समझ में आ जाती है। इस से नये काम सीखने वाले तथा पुराने दोनों प्रकार के कारीगर लाभ उठा सकेंगे और सभी वर्कशापों में काम सीखने वाले ड्राईवर तथा उम्मीदवार या इन्जन के इन्जीनियर, मोटर मालिक मैकेनिक का काम सीखने के उम्मीदवारों की जानकारी के लिए पर्याप्त है। अगर आपके पास कार है तो इस पुस्तक को जरूर पढ़ें। इसके बाद आप कार के बिगड़ने पर तुरन्त ठीक कर लिया करेंगे।

मूल्य २०) रुपये डाक खर्च सहित।

वी पी द्वारा पुस्तकें मंगाने का पता :—

अशोका प्रकाशन, ४९९५ रहमान स्ट्रीट, चांदनी चौक, दिल्ली-६

...अपने स्वास्थ्य का ... ध्यान रखना चाहिए। इसके लिए उसे ... चाहिए, क्योंकि व्यायाम से ही शरीर पुष्ट होता है तथा पुष्ट शरीर में ... का वास होता है। विद्यार्थी जीवन कच्चे घड़े के समान होता है। इस ... संस्कार डाले जाएँगे, वे ही जीवन भर रहेंगे। अतः विद्यार्थी को ...र रहना चाहिए। कुसंग का ज्वर बड़ा भयानक होता है। रहीम ने ठीक ही ...जैसी संगत बैठिए तैसोई फल दीन्ह।" बुरे साथी और आचरणहीन मित्र ... डूबो देते हैं।

...ार्थी का कर्त्तव्य है कि वह देश-भक्त हो। उसकी विचारधारा जाति-पाँति, ... तथा भाषा से ऊपर हो। उसका दृष्टिकोण व्यापक तथा राष्ट्रीय हो। ...ारों, रूढ़ियों तथा अंध-विश्वासों को उसे त्याग देना चाहिए। उसे राज- ...दल से दूर रहना चाहिए क्योंकि आज के अधिकांश राजनैतिक दल ...का उपयोग हिंसा, तोड़-फोड़, उपद्रव आदि के लिए करते हैं।

...ार्थी को चाहिए कि भारतीय संस्कृति के मूल को समझे तथा पश्चिम ...तियों का अंधानुकरण करके उनका भक्त न बने। फैशन से दूर ...रतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का ...

...: लोग विद्यार्थियों पर ही दोषारोपण करते हैं कि वे अपने आदर्शों से च्युत ... पर वास्तविकता यह है कि केवल विद्यार्थी ही इसके लिए मात्र उत्तरदायी ...ज आवश्यकता छिद्रान्वेषण या दोषारोपण की नहीं है, आवश्यकता है भटके ... को सही दिशाएँ दिखाने की। उसे अनुशासनहीनता की दलदल से ...कर्त्तव्य-परायणता, अनुशासन तथा स्वावलम्बन के मार्ग पर लाने की ...है। इसके लिए अभिभावकों, शिक्षकों तथा सरकार को मिलकर प्रयास ...।

18. परिश्रम ही सफलता की कुञ्जी है

अथवा

परिश्रम के सिवा कोई रास्ता नहीं

[CBSE, 1977, A.I. SSE, 1983, '85]

...ु शर्मा ने पञ्चतन्त्र में कहा है, **"काम मनोरथ से नहीं, उद्यम से सिद्ध होते** ...किसी ने देखा है कि सोए हुए सिंह के मुँह में मृग अपने-आप पहुँच जाए? ...रिश्रम करना पड़ता है। अतः कार्य-सिद्धि के लिए सबको श्रम करना ...

...सन्देह कार्य की सफलता के लिए हमें परिश्रम करना चाहिए और परिश्रम ...ना चाहिए दृढ़ संकल्प। अपनी इच्छाओं को जगाकर हमें देखना चाहिए ...बल इच्छा किसकी है। साहित्य, सेवा, व्यापार, राजनीति, विज्ञान, ... इंजीनियरी आदि में से जो भी स्वभाव और प्रवृत्तियों के अनुकूल